

मानवतावादी आंदोलन

अनुस्थापकों का बुनियादी गठन

भारत, जून 2001

संयोजन केंद्र

आर 10, तीसरी मंजिल, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

टेलीफोन-011-29544683, 29544684, 29544685

ई मेल-info@humanistmovement.org

www.humanistmovement.org

विषय-सूची

प्रस्तावना	4
मानवतावादी आंदोलन की सामान्यताएं	
संगठन	9
प्रस्तावना	
सहभागिता के स्तर तथा खंड	
संरचना का संगठनात्मक चार्ट (साधारण एवम् बुनियादी चार्ट)	
साधारण चार्ट	
बुनियादी चार्ट	
सांगठनिक बैठक-सभा बैठक, परिषद बैठक, साप्ताहिक बैठक	11
मूल सिद्धांत, विचारधारा और ग्रंथ सूचि	11
मानव मूल्यों को केन्द्रित करना	
जाति, आय, धर्म, जाति, भाषा, आय, लिंग, जीवन-स्तर इत्यादि के कारण उत्पन्न भेद-भाव के विरुद्ध संघर्ष करना भाषा, विचार, जीवनशैली इत्यादि के कारण होनेवाले भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाना और काम करना।	
सामाजिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों में जैसे शारीरिक-दुःखों और मानसिक-यातनाओं से उबरने के लिए काम करना,	
किसी भी प्रकार की हिंसा (शारीरिक, मानसिक, नस्लीय, धार्मिक, आर्थिक, लैंगिक, नैतिक आदि) का विरोध करना। हर प्रकार की हिंसा (शारीरिक, नस्लीय, धार्मिक, आर्थिक, लैंगिक, मनोवैज्ञानिक,) का विरोध करना।	
व्यक्तिगत और सामाजिक कार्य में अहिंसक रहना	
धार्मिक-रीति-रिवाज सांस्कृतिक, रीतिरिवाज, जीवनशैली आदि विविधताओं का सम्मान करना विचारों की स्वतंत्रता और लोगों की आस्था को ध्यान में रखना।	
विचारों तथा कार्यों से सहमत होकर एक सु-संगत यापन का प्रयास करना	
प्रमुख मानवतावादी "विचार और सिद्धांत" दूसरों के प्रति तुम उसी तरह का व्यवहार करो जैसाकि तुम अपने प्रति चाहते हो	
व्यक्तिगत कार्य	14
प्रस्तावना-मानवातावाद का व्यक्तिगत कार्य क्या है?	
व्यक्तिगत कार्य के प्राथमिक अभ्यास	
आंतरिक मार्गदर्शन	
यथार्थ कार्य	
शांति का अनुभव	
जीवन का अर्थ	
सारांश	
कार्य पद्धति	17
परिशिष्ट	18
मानवतावादी आंदोलन क्या है?	
मानवतावादी स्वधार परियोजना-मानवतावादी केंद्र	
साप्ताहिक बैठक के दौरान मानवतावादी संगठन	
मानवतावादी आंदोलन के सिद्धांत और विचारधारा का स्पष्टीकरण	

मानव के केंद्रीय मूल्य को महत्व में रखना अच्छ वह है जो लोगों को जोड़ता है, बुरा वह है जो लोगों को तोड़ता है। अच्छ व्यक्ति कौन है? आंतरिक मार्गदर्शक हमारी सकारात्मक विशेषताएँ उनकी सकारात्मक विशेषताएँ मानवतावादी कौन है? वर्तमान आम परिस्थिति जीने की परिस्थितियाँ मानवतावाद और मानववाद (सापेक्षिक सुधार और वास्तविक परिवर्तन) आदान-प्रदान बहुगुणता गैर-पैतृकवाद यथार्थ कार्य दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा व्यवहार तुम अपने प्रति चाहते हों विचार, एहसास और कार्य में सहमति प्राकृतिक चीजें तथा मानवनिर्मित वस्तुएं सबके लिए मुफ्त शिक्षा स्वास्थ्य सुविधा और जीवन की गुणवत्ता अतीत और भविष्य अहिंसा का अर्थ है हिंसा न करना सरकार की नीतियाँ शारीरिक हिंसा क्या है? आर्थिक हिंसा क्या है? जातीय हिंसा क्या है? धार्मिक हिंसा क्या है? लैंगिक हिंसा क्या है? मनोवैज्ञानिक हिंसा क्या है? नैतिक हिंसा क्या है? आंतरिक हिंसा क्या है? जीवन का अर्थ	
मनुष्य के व्यक्तिगत कार्यों के स्तम्भ	26
पूरक अभ्यास उत्रत अभ्यास	
आंतरिक मार्गदर्शक (वैकल्पिक प्रस्तावना)	27
आंतरिक मार्गदर्शक पर मार्गदर्शित अनुभव	27
आंतरिक मार्गदर्शक की संरचना विस्थापन और आंतरिक मार्गदर्शक कठिनाईयाँ और आंतरिक मार्गदर्शक दुविधा और आंतरिक मार्गदर्शक	
मार्गदर्शित अनुभव-शांति का कुँआ	30
यथार्थ कार्य के सिद्धांत	31
मानव को केंद्रीय मूल्य तथा महत्त्व में रखना	32

प्रस्तावना

यह पुस्तिका अनुस्थापकों के लिए मार्ग दर्शक का काम करेगी। कार्यशालाओं, शिविरों, कार्य केंद्रों जगहों में निम्नलिखित विषय समझाए जा सकते हैं और उनका स्पष्टीकरण दिया जा सकता है। यहाँ पर हम मानवतावादी आंदोलन की अधिकृत ग्रंथ सूची का आदर करते हुए प्राथमिक स्पष्टीकरण कराना है।

मानवतावादी आंदोलन की सामान्यताएँ

मानवतावादी आंदोलन क्या है?

यह एक ऐसे लोगों का समूह है जिनका लक्ष्य, कार्य एवम् मूल्य मानवतावादी है।

मानवतावादी मुख्य आदर्श क्या हैं?

मानवतावादी मुख्य आदर्श निम्नलिखित हैं।

1. जीवन मूल्यों के बीच मानव को केन्द्रित करना। इसका मुख्य उद्देश्य है—“मानव से बढ़कर कुछ भी नहीं, एक मानव दूसरे मानव से ऊँचा या नीचा नहीं।”
2. जाति, आय, लिंग, भाषा और विचारों को लेकर, होनेवाले भेदभाव का विरोध करना और उसे दूर करना।
3. शारीरिक पीड़ा और मानसिक वेदना को दूर करने के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों में कार्य करना।
4. किसी भी प्रकार की हिंसा (शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, जातीय, आर्थिक, लैंगिक एवं नैतिक हिंसा)
5. व्यक्तिगत और सामाजिक गतिविधियों से अहिंसक रहना।
6. सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और जीवन-शैलियों की विविधता का सम्मान करना।
7. विचारों की विश्वसनीयता को स्वतन्त्र रूप से बढ़ाना।
8. सु-संगत जीवन जीने का प्रयास करना, अर्थात् विचार, भावना तथा कार्यों के साथ सु-संगत होकर जीना। संक्षेप में, मुख्य सिद्धांत है कि “दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना, जैसा कि हम अपने प्रति चाहते हैं।”

मानवतावादी आंदोलन का मुख्य लक्ष्य क्या है?

इसका मुख्य लक्ष्य है—पृथ्वी का मानवीकरण करना, जिसका अर्थ है उपर्युक्त आदर्शों के अनुसार समाज तथा व्यक्ति में सकारात्मक बदलाव लाना। इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि मानवतावादी आंदोलन प्रत्येक व्यक्ति तथा पूरे समाज के दुःख-दर्द को दूर करने, सुख तथा आजादी बढ़ाने की दिशा में कार्य करता है।

मानवतावादी आंदोलन की शुरुआत कैसे हुई?

इसकी शुरुआत अर्जेन्टीना के एक विचारक सिलो (मारियो रॉड्रिग कोबो) की लेखनी से प्रभावित होकर लॉटिन अमेरिका में हुई। तत्पश्चात वहाँ के स्वयं सेवी संगठनों के अथक प्रयास से इस आन्दोलन का प्रसार-प्राचर विश्व के दूसरे देशों में हुआ।

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी क्या गतिविधियाँ हैं?

पूरे भारत के प्रायः सभी राज्यों के अनेक शहरों, कस्बों तथा गाँवों में इसके हजारों सदस्य तथा समर्थक हैं। इसकी गतिविधियों का संयोजन उसके सदस्यों द्वारा नियमित बैठकों तथा हर प्रकार के माध्यमों (जैसे यात्रा, इमेल, पत्राचार, पत्रिका, स्थानीय समाचार पत्र, ह्यूमनस्केप पत्रिका इत्यादी) के विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवतावादी आंदोलन पाँच महाद्वीपों के लगभग 70 राष्ट्रों में कार्यशील है। कुछेक प्रासंगिक कार्यवाही संस्थान जैसे—ह्यूमेनिस्ट इंटरनेशनल (Humanist International) यह राजनीतिक पार्टियों तथा अन्य संस्थाओं का अंतर्राष्ट्रीय फेडरेशन है। इंटरनेशनल ऑफ ह्यूमन सपोर्ट (International Federation of Human Support) (विभिन्न गैरसरकारी सामाजिक संस्थाओं का संगठन) और वर्ल्ड सेंटर फॉर ह्यूमनिस्ट स्टडिज (World Centre for Humanist Studies) मानवतावादी हितों के विषय संशोधन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों जैसे—“बिना जंग की दुनिया” (Without world War) में जाने-माने विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों को एक मंच पर लाता है।

मानवतावादी आन्दोलन का कार्य क्षेत्र।

यह शहरों, कस्बों, गाँवों, में काम करता है। घर, कार्यालय के परिवेश में यह बुनियादी स्तर पर कार्य करता है।

मानवतावादी आंदोलन के सदस्य एवम् मानवतावादी कौन है?

जो व्यक्ति मानवतावादी मूल्यों, लक्ष्यों तथा कार्यशैली को अपनाता है, वह मानवतावादी आंदोलन का सदस्य बन सकता है।

मानवतावादी आंदोलन किन-किन व्यक्तियों, संस्थाओं के साथ कार्य करता है?

मानवतावादी आंदोलन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े हुए स्वयंसेवकों के साथ काम करता है। इसके अलावा सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों, अधिकारियों, संस्थाओं एवम् सामाजिक संस्थाओं के साथ परस्पर मिलकर कार्य करता है।

कोई भी व्यक्ति द्वारा मानवतावादी आंदोलन में भाग कैसे लिया जा सकता है?

कुछ लोग मानवतावादी आंदोलन की गतिविधियों में कभी-कभी भाग लेते हैं। जबकि कुछ लोग संयोजित ढंग व नियमित रूप से काम करते हैं। मानवतावादी आंदोलन के विचारों को व्यक्ति स्वतंत्रता के साथ अकेले या दूसरों के साथ मिलकर प्रचार-प्रसार कर सकता है।

मानवतावादी आंदोलन किन-किन क्षेत्रों में कार्य करता है?

चूँकि सभी क्षेत्र अमानवीय हो गए हैं, इसलिए सभी क्षेत्रों को मानवीय बनाने की आवश्यकता है। जो काम अभी हो रहे हैं, उनमें कुछ निम्नलिखित हैं :-

वर्तमान में मानवतावादी आन्दोलन के द्वारा जिन कार्यों को किया जा रहा है वे निम्नवत् है—

सामाजिक क्षेत्र

मानव आत्मनिर्भरता अभियान : क्षेत्र के लोगों के साथ जुड़कर, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा जीवनस्तर के विकास के लिए। सरकारी संस्थाओं, जन प्रसारण मीडिया, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा दूसरे प्रकार की संस्थाओं के साथ वैचारिक आदान-प्रदान करता है।

स्वयंसेवी कार्य तथा स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं के समूह बनाना।

सांस्कृतिक क्षेत्र

सांस्कृतिक विषयों के प्रोजेक्ट तथा अभियान (जैसे—ह्युमनस्केप पत्रिका), सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना तथा आयोजन (भाषण, सेमिनार, वाद-विवाद प्रतियोगिता, प्रदर्शनी, पुस्तक मेला, प्रतियोगिताएँ इत्यादि) करना

सरकारी संस्थानों, जन-प्रसारण मीडिया, सांस्कृतिक संस्थाओं तथा जाने-माने व्यक्तियों के साथ आदान-प्रदान।

राजनीतिक क्षेत्र

तत्कालीन तथा मूल मुद्दों के अभियानों में भाग एलेना तथा आयोजन करना।

चुनाव प्रसारण, मानवतावादी पार्टी के कार्यकर्ताओं के समूह का आयोजन।

मानवतावादी पार्टी के साहित्य का प्रकाशन और वितरण।

सरकारी संस्थानों, जनप्रसारण मीडिया, सांस्कृतिक संस्थाओं तथा जाने-माने व्यक्तियों के साथ आदान-प्रदान।

ग्रासरूट क्षेत्र

पड़ोसी क्षेत्रों के स्थानीय मुद्दों के अभियानों में भाग लेना और आयोजन करना।

मुहल्ला समाचार पत्र निकालना तथा उसका वितरण।

समर्थकों के समूहों का आयोजन करना तथा उनके साथ संबंधों को आगे बढ़ाना।

मानवतावादी केन्द्रों का आयोजन तथा अलग-अलग विषयों के कमीशन बनाना तथा उनका संचालन करना।

व्यक्तिगत क्षेत्र

व्यक्ति के पूर्ण निखार, दूसरों के साथ आदान-प्रदान, निःस्वार्थ कार्यों को बढ़ावा देने की गतिविधियों में भाग लेना तथा आयोजन करना।

विभिन्न कार्य

जनसम्पर्क मीडिया आयोजन, जनसम्पर्क, अनुवाद, कम्प्यूटर कार्य (जैसे डाटा भरना, रूप रेखा बनाना इत्यादि), समाचार पत्रों को बांटना, विज्ञापन तथा अनुदान जमा करना, विडियो बनाना इत्यादि।

मानवतावादी आंदोलन अपने संदेश तथा प्रस्तावों का कैसे प्रसार करता है?

मानवतावादी आंदोलन हर प्रकार के तौर तरीकों तथा साधनों के द्वारा अपने संदेशों तथा प्रस्तावों के प्रसार की कोशिश करता है। यह कार्य मुख्यतः **ग्रासरूट** के सदस्यों की गतिविधियों के द्वारा किया जाता है। जैसे प्रसार अभियान, स्थानीय स्तर पर मुहल्ला समाचार पत्र; निकालना और वितरण करना और आपसी बातचीत के जरिए इत्यादि। इसके अलावा यह प्रसार स्थानीय संभावनाओं के अनुसार कई जगह अपनी पत्रिका (जैसे ह्यूमन स्केप), इन्टरनेट साईट, रेडियो तथा दूरदर्शन **प्रोग्रामों** से भी किया जाता है। मानवतावादी आंदोलन द्वारा तथा दूसरे प्रकाशकों द्वारा निकाली गई मानवतावादी आंदोलन की पुस्तकों की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराया जाता है। मानवतावादी आंदोलन के बारे में बहुत प्रकार के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, प्रेस रिलीज तथा सम्पादकों के नाम **पत्रलेखन** में लिखा गया है।

मानवतावादी आन्दोलन अपनी गतिविधियों के लिए धनराशि कैसे जुटाता है?

किसी भी अन्य मानव समूह की तरह मानवतावादी आंदोलन को भी अपनी गतिविधियां चलाने के लिए धन की जरूरत पड़ती है। बहरहाल मानवतावादी आंदोलन जिस काम को सही समझता है, उसे स्वतंत्ररूप से और बगैर कोई समझौता किए करना चाहता है। इसलिए मा. आ (मानवतावादी आंदोलन) के (कार्ड्स के रूप में संगठित सदस्यों की) संरचना के समन्वय और विस्तार की गतिविधियों को उनके सदस्यों के स्वैच्छिक योगदान के जरिए ही चलाया जाता है। इस स्वैच्छिक योगदान को अर्धवार्षिक योगदान कहते हैं। यानी प्रत्येक सदस्य हर छः महीने में, हर 21 जून और 21 दिसम्बर को एक निश्चित धनराशि का योगदान करता है। इस धनराशि का उपयोग (मानवतावादी आंदोलन) की गतिविधियों के लिए किया जाता है।

भारत में **संरचना** के सभी सदस्य एक निश्चित राशि देते हैं और सहभागी सदस्य स्वेच्छा से जो देना चाहें, देते हैं।

कई विशेष आयोजन तथा गतिविधियों के लिए सहभागी सदस्यों से अनुदान लिया जाता है (जैसे कि झोपड़ी इलाके में मुफ्त दवाओं को बाँटने के लिए, स्थानीय समाचार पत्रों में विज्ञापन इत्यादि)। इन गतिविधियों में भाग लेने वाले संस्थागत सहभागी तथा अन्य सदस्य स्वेच्छा से अपना अनुदान देते हैं। "मानव सहायता परियोजना" जैसी कुछ गतिविधियां स्वैच्छिक अनुदान तथा उन्ही लोगों तथा दूसरों के सहयोग से मिली धनराशि से चलायी जाती हैं।

कोई भी सदस्य चंदे से जमा किए गए धन से अपनी आजीविका नहीं चलाता है।

मानवतावादी आंदोलन के सदस्यों का सैद्धान्तिक गठन

मानवतावादी आंदोलन के मुख्य विचारों का स्पष्टीकरण साप्ताहिक कार्यशालाओं, शिबिरों और उसके साहित्य द्वारा किया जाता है। यह पहलू बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जितना एक सदस्य मानवतावादी विचारों और विभिन्न मुद्दों के बारे में अपनी समझ स्पष्ट करता है उतना ही उसका कार्य बेहतर तथा प्रभावशाली बन पाता है।

सामाजिक और व्यक्तिगत बदलाव के लिए रणनीति

मानवतावादी आंदोलन का **समस्त** उद्देश्य है विश्व का मानवीकरण करना। इसका अर्थ है—शारीरिक दुःखों और मानसिक-यातनाओं को खत्म करते हुए आजादी और खुशी को विकसित करना। निश्चित ही यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक रूपांतरण के लिए अतयन्त आवश्यक है। मानवतावादी आंदोलन सक्रिय अहिंसा और मानवतावादी-भेदभाव रहित तरीके से अनुसरण करता है। प्रत्यक्ष आचरण में इसका अर्थ कि हिंसा और भेदभाव का विरोध करना और इस कार्य को अहिंसक तरीकों से ही किया जाना है। इसलिए प्रस्तुत सभी प्रस्ताव और साधन उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हैं।

संकटकालीन परिस्थितियों में मानवतावादी आन्दोलन का उदय हुआ। और चार दशक पहले एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अपनी भूमिका स्पष्ट रूप कर चुका। इसके बाद से यह अपनी नई भूमिका के लिए तैयारी कर रहा है। विश्व परिवर्तन के संकट से गुजर रहा है। पुराने विश्व का अन्त ही है और एक नए जगत का जन्म हो रहा है। फिर भी यह

अनिश्चित है कि नए जगत का क्या स्वरूप होगा। मोड़ के ऐसे बिंदु पर इतिहास दर्शाता है कि मजबूत सकारात्मक या नकारात्मक संदर्भ आनेवाले नई दुनिया के निर्माण की दिशा तय करने में एक अहम भूमिका निभाएँगे। आज का संकटपूर्ण और अस्थिर परिस्थिति में एक छोटी सी चिंगारी या तो आग फैला देगी या एक ऐसा इंजिन शुरू कर देगी जो मानवजाति को एक सच्चे मानव युग की तरफ ले जाएगी। दरअसल, अमानवीकरण (भय., अनिवार्य निराशा, विस्थापन, अर्थहीनता) के दबाव **के तहत** लोग बड़ी अधीरता से हल की तलाश करते हैं। चूँकि पेश किया हुआ और स्वीकार किया गया हल सही या गलत अथवा सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है, ऐसी अवस्था सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, ऐसी अवस्था अपरिहार्यरूप से खतरनाक भी हो सकती है या फिर एक मौका भी हो सकता है।

मानवतावादी आंदोलन का यह मानना है कि ये प्रक्रियाएँ न तो यांत्रिक हैं और न ही स्वाभाविक हैं, बल्कि ये मानवी इच्छाओं पर निर्भर हैं। ये अपरिहार्य रूप से लोगों द्वारा अपरिहार्य प्रश्नों के दिए जानेवाले उत्तर पर निर्भर होती हैं। क्या हम जीना चाहते हैं? यदि ऐसा है तो ऐसी कौन सी स्थितियाँ हैं जिन्हें हम अपनाना चाहते हैं?

इस तरह, मानव जाति के भविष्य में मजबूत आस्था रखते हुए मानवतावादी आंदोलन उन अपरिहार्य प्रश्नों के सकारात्मक उत्तरों को बढ़ावा देने की दिशा में एक प्रमुख भूमिका निभाना चाहता है। एक नैतिक शक्ति के रूप में उठते हुए समय में एक सकारात्मक संदर्भ **बनते** हुए यह आंदोलन इस भूमिका को निभाएगा। इसके लिए यह हर **गुंजाइशवाले** लोगों के भीतर पहले से मौजूद नयी संवेदना को महत्व देता है।

इस तरह से मानवतावादी आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में अपने आपको एक सकारात्मक संदर्भ के रूप में पेश करना शुरू कर दिया है, दुनिया बड़ी तेजी से ऐतिहासिक परिवर्तन के मोड़ पर पहुँच रहा है, इसलिए अब इस काम के लिए ज्यादा वक्त नहीं बचा है।

मानवतावादी आंदोलन की स्थिति विविध क्षेत्रों में उसकी गतिविधियों से स्पष्ट होती है। विश्व स्तर पर मानवतावादी आंदोलन खुद को सभी देशों में मौजूद रखना चाहता है, क्योंकि दुनिया के आपसी ताने-बाने में मानवतावादी प्रस्तावों का व्यावहारिक प्रदर्शन कहीं भी दर्शाया जा सकता है हर जगह उसके बढ़ते दायरे और प्रभाव को देखा जा सकता है। इसके अलावा ऐसे होनेवाले बदलाव से वैश्विक जगत में राष्ट्रीय द्विपों के लिए कोई जगह नहीं रहेगी, जैसा कि पूर्ववर्ती सांसारिक इतिहास के मामलों में होता रहा है।

ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल, वर्ल्ड ह्यूमन फोरम, वर्ल्ड विदाउट वर्ड्स, इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर ह्यूमन सपोर्ट और अंतरराष्ट्रीय अभियान जैसी पहल भी इस वैश्विक पहुँच का हिस्सा हैं। इनके जरिए ज्यादा असर पैदा करने के लिए मानवतावादी आंदोलन के प्रस्तावों से सहमत दूसरे संगठनों के साथ कार्य-प्रचार तथा गतिविधियों को भी अमल में लाया जा सकता है।

राष्ट्रीय स्तर पर मानवतावादी आंदोलन ने ह्यूमनिस्ट पार्टी, फाउंडेशन फॉर ह्यूमनाइजेशन, सांस्कृतिक केंद्र जैसे संगठनों का एकत्रित किया। इसके अलावा यह अभियान चलाना, अक्शन फ्रंट्स, फोरम्स, फेडरेशन जैसी संयुक्त कार्यवाहियों को चलाने के लिए अन्य प्रगतिशील संगठनों को भी आमंत्रित करता है। इन प्रतिनिधियों में गैर सरकारी संगठन (NGOs), ट्रेड यूनियन, समुदाय, सांस्कृतिक, राजनैतिक और धार्मिक समूह, सामाजिक कार्यकर्ता और संगठन जैसे मुद्दों से प्रेरित समूह भी शामिल हैं। इसका एक उदाहरणार्थ है- "अनोखा भारत, मानवीय भारत" अभियान।

एक अन्य स्तर पर, मानवतावादी आंदोलन प्रत्येक मुहल्लों में ग्रासरूट ह्यूमनिस्ट ग्रूप, केंद्रों, न्यूजलेटर्स तथा अन्य संगठनों को महत्व देता है। समर्पित कार्यकर्ताओं तथा शुभचिंतकों की वजह से घरों, स्कूलों, कॉलेजों, फैक्टियों, कार्यालयों और कभी-कभी किराए की जगहों में ये गतिविधियाँ चलाई जाती हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य है नष्ट हुए सामाजिक ताने-बाने को फिर से जोड़ना व नए संदेश का प्रसार करना।

मानवतावादी आंदोलन एक नई संस्कृति है जो प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्त होना चाहती है। इसलिए औपचारिक रूप से एक संस्थान न होने के बावजूद भी मानवतावादी आंदोलन के सदस्य विशिष्ट क्षेत्रों में नए मानवतावाद को लागू करने के लिए विविध संगठनों का निर्माण करते हैं। यहाँ पर इस बात की तरफ संकेत करना उपयुक्त होगा कि मानवतावादी आंदोलन की कुल मिलाकर रणनीति है मानव प्रयास के प्रत्येक क्षेत्र का मानवीकरण करना। इसका मानना है कि कोई भी मानवी मुद्दा मानवतावादी आंदोलन के लिए पराया नहीं है। इसलिए राजनैतिक तथा संवैधानिक ढाँचे में मानवतावादी बदलाव लाने के लिए मानवतावादी पार्टियों को एक वैध अहिंसक साधन के रूप में देखा जाता है।

मानवतावादी आंदोलन वर्तमान प्रसार माध्यमों के जरिए विस्तार और मुहल्ला न्यूजलेटर्स, पत्रिकाओं, रेडियो तथा टी.वी. स्टेशनों जैसे खुद के संसाधनों को विकसित करने को भी महत्त्व देता है। मानवतावादी आंदोलन हर जगह मानवतावादियों के बीच समन्वय तथा संवाद की जरूरत को महत्त्व देता है, क्योंकि इसके बिना गतिविधियों में आवश्यक क्षमता हासिल कर पाना मुश्किल है। इसलिए स्थायी कार्यकर्ताओं का एक सु-संगठित ढाँचा लगातार विकसित हो रहा है। हर बार और ज्यादा संगठित तथा अधिक प्रभावशाली बन रहा है। यही वो चालक शक्ति है जो मानवतावादी गतिविधियों को प्रेरणा और दिशा देती है।

मानवतावादी आंदोलन में अनगिनत सहयोगी, शुभचिंतक और सहानुभूति रखनेवाले लोग शामिल हैं। उनमें से कुछ लोगों ने महत्त्वपूर्ण विषयों पर ह्यूमनिस्ट क्लब का गठन किया है, जहाँ पर वे मानवतावादी दृष्टिकोण एवम् मूल्यों को लागू करते हैं। मीटिंगों, प्रकाशनों, बी.बी.एस. तथा इंटरनेट के माध्यम से अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

परिवर्तन के लिए मानवतावादी आंदोलन के सदस्य समाज के मानवीकरण के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत मानवीकरण के लिए भी काम करते हैं। इसके अलावा वे इसे साथ-साथ किए जानेवाले एक आवश्यक, संभव तथा वांछित काम के रूप में देखते हैं। इस तरह, उपरोक्त सामाजिक गतिविधियों के अतिरिक्त व्यक्तिगत बदलाव के लिए भी साधनों तथा प्रस्तावों का एक पूरा सेट है जिसे साप्ताहिक मीटिंगों में उपयोग में लाया जाता है।

नए मानवतावाद का प्रस्ताव आज के संकट में एकमात्र ठोस हल है और बेहतर जगत के लिए सबसे अच्छा विकल्प है। मानवतावादी आंदोलन पूरे आत्मविश्वास के साथ काम करता है कि अब इसका समय आ रहा है और इसे इस बात का पूरा विश्वास है कि मनुष्य एक मानवतावादी लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा है और वह लक्ष्य है एक वैश्विक मानव राष्ट्र।

संगठन

प्रस्तावना—संगठन प्रस्तावित उद्देश्यों को हासिल करने का एक साधन है। संगठन से गतिविधियाँ ज्यादा प्रभावी होती हैं। बिना संगठन के, बड़ी संख्या में सदस्य भी बेअसर होते हैं।

सहभागिता के स्तर और खंड

मानवतावादी आंदोलन ऐसे लोगों का समूह है जो एक ही प्रकार के उद्देश्यों और जीवन मूल्यों में विश्वास रखते हैं। इसमें दो प्रकार के सदस्य होते हैं। **संस्थागत सदस्य और सहभागी सदस्य**। संस्थागत सदस्य संगठित रूप से मानवतावादी आंदोलन की गतिविधियों में भाग लेते हैं। आप संस्थागत सदस्य हैं।

सहभागी सदस्य वे हैं जो सहानुभूति तथा शुभेच्छा रखते हैं, लेकिन संगठित रूप से काम नहीं करते हैं।

मानवतावादी आंदोलन की प्रगति में अपने योगदान के स्तर के अनुसार मानवतावादी आंदोलन में सदस्यों की अलग-अलग भूमिकाएँ होती हैं। इसे सहभागिता का स्तर कहा जाता है। सहभागिता के पाँच स्तर हैं और प्रोन्नति तथा जिम्मेदारियों से संबंधित उनकी जरूरतें निम्नलिखित हैं—

- क) समूह प्रतिनिधि (Group Delegates) : जो 10 या अधिक शुभेच्छकों को सूचना देने, सहभागी बनाने, उन्हें गतिशील करने और उन तक साधन सामग्री पहुँचाने का कार्य करता है।
- ख) दल प्रतिनिधि (Team Delegates) : जो कम से कम 12 समूह प्रतिनिधियों को संगठित करता है और मार्गदर्शन देता है।
- ग) महा प्रतिनिधि (General Delegates) : जो 150 या अधिक सदस्यों को संगठित करता है और उन्हें मार्गदर्शन देता है।
- घ) संयोजक (Co-ordinators) : जो 1500 या अधिक सदस्यों को संगठित करता है और उन्हें मार्गदर्शन देता है।
- ङ) महा संयोजक (General Co-ordinators) : जो 1500 या अधिक सदस्यों को संगठित करता है और उन्हें मार्गदर्शन देता है।

प्राप्त परिस्थितियों में 70% महिला सदस्यों को प्रोन्नति दी जाती है (उदा. 12 के बजाय 9). ऐसा उनके प्रति मौजूदा भेदभाव को देखते हुए किया जा रहा है और उन्हें उच्च स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए ऐसा करना जरूरी है।

मानवतावादी आंदोलन की आम रणनीति और मार्गदर्शन उच्चतम स्तर के अनुस्थापक द्वारा दी जाती है (यानी महा संयोजक). को **महा संयोजक की सभा** में उनकी गतिविधियों का समन्वय करता है।

कोई भी सदस्य उसके द्वारा संगठित तथा अनुस्थापित सदस्यों की संख्या के आधार पर सहभागिता के उस स्तर तक पहुँच सकता है। जब आप सदस्यों का एक समूह बनाते हैं तब आप **अनुस्थापक** हो जाते हैं। ऐसे सभी सदस्य दलों (या समूहों) में गठित होते हैं। इन दलों को परिषद कहते हैं जिसे एक अनुस्थापक मार्गदर्शन देता है। कुछ परिषदों में दूसरों से ज्यादा सदस्य होते हैं। शुरुआती परिषद को आधार परिषद या समूह प्रतिनिधि का परिषद कहते हैं।

परिषद आपस में एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और वे एक लाईन बनाते हैं। यहाँ पर एक अनुस्थापक द्वारा मार्गदर्शित सभी परिषद एक लाईन का गठन करते हैं।

विभाग—संरचना के अंदर सदस्य तीन विभिन्न कार्यों या जिम्मेदारियों को पूरा कर सकते हैं। संरचना, प्रबंधन और सहायता। जो जिस प्रकार का दायित्व निभाता है, उसे उस विभाग के सदस्य के रूप में जाना जाता है।

संरचनात्मक विभाग—इसका काम है ज्यादा सदस्य बनाना, नए समूहों का गठन करना और गतिविधियों को आयोजित करना एवं मार्गदर्शन देना। अनुस्थापक का लक्ष्य होता है अपनी संरचना का अधिकतम विकास और प्रभाव सदस्यों के लिए श्रेष्ठतम अनुस्थापन, साधन तथा परिवेश उपलब्ध करना। अनुस्थापक स्थानीय उपलब्ध करना। अनुस्थापक स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर समूह शुरू कर सकता है और उन्हें मार्गदर्शन दे सकता है।

प्रशासकीय विभाग—इसका काम है सूचनाओं को इकट्ठा करना और उन्हें वितरित करना, संचार व्यवस्था को स्थापित करना तथा विकसित करना, चंदा जुटाना, छपाई के साधन जुटाना, आम तौर पर ऐसे किसी भी संसाधन को जुटाना जिसकी संरचना को अपनी गतिविधियों के लिए जरूरत हो।

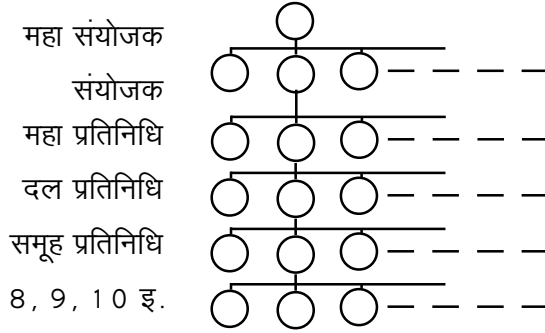
1. यानी वे किसी परिषद में शामिल नहीं होते हैं और गतिविधियों की स्थायी जिम्मेदारी या काम नहीं लेते हैं। उन पर साप्ताहिक बैठक में उपस्थित रहने, गतिविधियों को पूरा करने या चंदा इकट्ठा करने का कोई बंधन नहीं होता है।

सहायक विभाग—यह मानवतावाद से संबंधित सभी विषयों के बारे में सदस्यों को स्पष्टीकरण देता है, उनके नैतिक बल को बढ़ाए रखता है, सदस्यों के बीच सामंजस्य को विकसित करता है, स्पष्टीकरण के लिए साधन उपलब्ध कराता है, और व्यक्तिगत कार्य तथा सैद्धान्तिक स्पष्टीकरण के लिए बैठक, कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन करता है।

संरचना का संगठनात्मक चार्ट

(साधारण और बुनियादी चार्ट)

साधारण चार्ट



बुनियादी चार्ट

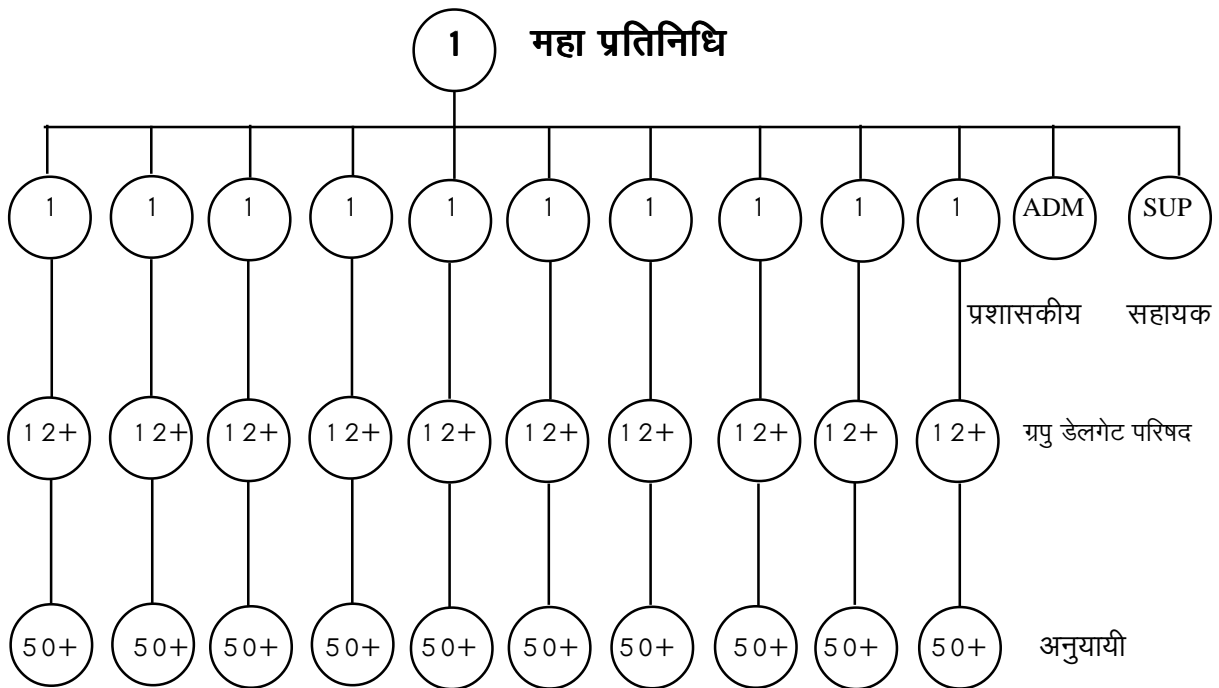
महा प्रतिनिधि और विभाग (सेक्टर्स)

दल प्रतिनिधि और विभाग

समूह प्रतिनिधि और विभाग

आधार (समूह प्रतिनिधि) परिषद, दल प्रतिनिधि परिषद,

बुनियादी चार्ट (महा प्रतिनिधि के संगठन का उदाहरण)



- ★ महा प्रतिनिधि + दल प्रतिनिधि = दल प्रतिनिधि परिषद
- ★ दल प्रतिनिधि + समूह प्रतिनिधि = समूह प्रतिनिधि परिषद
- ★ समूह प्रतिनिधि अनुयाइयों के साथ संपर्क में रहते हैं

सांगठनिक बैठक-सभा की बैठक, परिषद बैठक, साप्ताहिक सभाए

सभा की बैठक

मानवतावादी आंदोलन के सर्वोच्च स्तरीय अनुस्थापक नियमित रूप से अथवा विशेष परिस्थिति में निर्धारित समयानुसार मीटिंग करते हैं। इन बैठक में आपसी विचारों तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है और आपसी सहमति पर पहुँचने के लिए आम विषयों पर चर्चा की जाती है।

परिषद बैठक

परिषद एक दल है और इसको एक दल की तरह काम करना होता है। इसलिए कम से कम हर छः महीने पर परिषद के सदस्य रिपोर्ट करने, मूल्यांकन करने तथा प्राप्त मार्गदर्शन के अनुसार सर्वसाधारण गतिविधियों की योजना बनाने के लिए आपस में मिलते हैं।

साप्ताहिक बैठक :

साप्ताहिक बैठक हमारी गतिविधियों का मूल आधार है। एक परिषद के सभी सदस्य प्रत्येक सप्ताह एक निश्चित समय पर बातचीत करने तथा गतिविधियों के आयोजन के लिए मिलते हैं। इसके अलावा साप्ताहिक बैठक के दिन जानकारी, समाचार तथा दूसरी जरूरत के साधन उपलब्ध कराते हैं। साप्ताहिक बैठक का अधिक महत्त्व है। क्योंकि इसी में सभी सदस्यों के सहयोग से गतिविधियों का विचार, आकलन तथा आयोजन किया जाता है। साप्ताहिक बैठक में सदस्य व्यक्तिगत मानवीकरण का कार्य करते हैं तथा मानवतावादी आंदोलन के विचारों के बारे में अधिक जानकारी पाते हैं। जो सदस्य नियमित रूप से साप्ताहिक मीटिंग में भाग लेते हैं वे ही इस सहभागिता से उपजित अनेक लाभों को सही अर्थों में पाते हैं।

मूलसिद्धांत, विचारधारा और ग्रंथ सूची

मानवतावादी आंदोलन के मूलसिद्धांत और विचारधारा के बारे में स्पष्टीकरण

विभिन्न विषयों के बारे में मानवतावादी आंदोलन के कई विचार हैं। कुछ विचार बहुत आम और गूढ़ हैं वे सब मिलकर मानवतावादी आंदोलन के सिद्धांत का गठन करते हैं, जिसे हम मूल सिद्धांत (डॉक्ट्रिन) कहते हैं। यह मूल सिद्धांत आमतौर पर जीवन, मानव, चेतना, जीवन का अर्थ, इतिहास, समाज, मानव संबंध आदि सिद्धान्तों के विषय में है। इन आम विचारों को मानवतावादी बनने और मानवतावादी कार्य करने के लिए इस मूल सिद्धांत का अध्ययन कोई जरूरी नहीं है।

मानवतावादी बनने और मानवतावादी काम करने के लिए मानवतावादी आंदोलन ने ठोस विचारों का यह एक मंच प्रस्तुत किया है जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए व्यावहारिक दिशा-निर्देश है। इसे आइडियोलॉजी कहते हैं। यह विचार आम मूल सिद्धांतों पर आधारित हैं, वास्तव में विशिष्ट मुद्दों, विषयों और क्षेत्रों में मूल सिद्धांतों के अमल को विचार कहते हैं।

उदाहरण के लिए "अगर हर चीज का अंत मौत है तो जीवन का कुछ मतलब ही नहीं" जैसा विचार किसी (डॉक्ट्रिन) मूल सिद्धांत का एक हिस्सा है जबकि सच्चा लोकतंत्र, साम्प्रदायिक सद्भाव, सत्ता का विकेंद्रीकरण, जन प्रशासन में पारदर्शिता, राजनैतिक जवाबदेही, जैसे विचार सिद्धांतों का हिस्सा हैं।

आज की दुनिया में तथाकथित मानवतावाद के कई रूप हैं। हमारे मानवतावाद को नव मानवतावाद या वैश्विक मानवतावाद² के नाम से जाना जाता है।

मानवतावादी आंदोलन के प्रमुख विचारों के बारे में साप्ताहिक बैठकों, कार्यशालाओं, साधना और उसके साहित्य के माध्यम से सदस्यों को स्पष्टीकरण दिया जाता है। हम लोगों मानवतावादी क्रिया-कलापों पर विचार-विमर्श करना आवश्यक है।

यहाँ पर कुछ प्रमुख मानवतावादी विचार पेश हैं। उनके बारे में स्पष्टीकरण पूरे तो नहीं हैं लेकिन वे चर्चा के लिए एक आधार होते हैं।

2. मानवतावाद के विभिन्न रूपों के लिए पढ़ें-"On being human" by Dr. Salvatore Puledda

मानव को केंद्रीय मूल्य के रूप में रखना³

किसी भी अन्य चीज की तुलना में मानव जीवन, मानव की खुशी और स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है। पैसा, सत्ता, सरकार, विचार, भौतिक चीजें, प्रकृति, प्राणी इत्यादि से बढ़कर है—लोग, कुछ लोगों की खुशी और आजादी की सेवा में रहना चाहिए। लोगों का दमन करने और उन्हें दुखी करनेवाली ऐसी गलत कार्यवाही के विरुद्ध मानवतावादी विद्रोह करना है।

जाति, आय, पंथ, लिंग, भाषा, विचार, जीवनशैली आदि के कारण होनेवाले भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाना और काम करना। मानवतावादी आन्दोलन का मुख्य कार्य है।

“मानव से बढ़कर कुछ हो नहीं सकता ओर न ही एक मानव दूसरे मानव से न उँचा है, न नीचा है।” इस विचार के पीछे मुख्य उद्देश्य है कि—“मानव से बढ़कर कुछ नहीं है और कोई भी मानव—मानव के नीचे नहीं है। सभी मानव निश्चित ही समान हैं और वे खुश और मुक्त रहने के हकदार हैं। भेदभाव का मतलब किसी को नुकसान पहुँचाना है, क्योंकि वह दूसरी जाति, आय वर्ग, पंथ, लिंग, भाषा, विचार, जीवनशैली आदि का है। संक्षेप में, हमसे विभिन्न होने के कारण दूसरों को नुकसान पहुँचाना। दूसरों के जीवन सुधारने को मौका देने से इंकार करना भी भेदभाव है। सभावनाएं होने पर भी मदद न करना भी भेद-भाव है। मानवतावादी आन्दोलन में किसी के दमन को मान्यता नहीं है।

सामाजिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों में (शारीरिक) दुखों और (मानसिक) यातनाओं से उबरने के लिए काम करना।

जब हम बीमार, भूखे—प्यासे या घायल हो अथवा बहुत सर्दी या गर्मी महसूस करते हों तो हमें दर्द महसूस होता है। इसका शरीर से सम्बन्ध है—ये शारीरिक दुख हैं।

जब हम भूतकाल की किसी बुरी घटना को याद करते हैं या वर्तमान में कुछ बुरा घटित होता है या भविष्य की घटना के बारे में सोचते हैं तो हमें यातना होती है। इस यातना का मन के साथ संबंध है। यह यातना मानसिक है।

विज्ञान, तकनीक, दवा एवं शिक्षा के विकास की मदद से हम दुखों से उबरते हैं और सभी लोगों तक इसका लाभ पहुँचाने के लिए सामाजिक संगठन का होना जरूरी है।

यातनाएँ भौतिक विकास पर निर्भर नहीं होती, बल्कि व्यक्ति द्वारा जीवन के अर्थ को समझने के स्वरूप पर निर्भर होती हैं। यानी यह हमारे जीवन के उद्देश्य, जीवन, लोग, संबंध, भविष्य व मृत्यु के समक्ष हमारी स्थिति पर निर्भर होता है।

मानवतावादी आंदोलन समाज और प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक दुखों और मानसिक यातनाओं के निवारण में रुचि रखता है। इसे प्राप्त करने के लिए विचार और कार्य हैं। परिणामतः यह इस बात पर निर्भर है कि इन प्रस्तावों पर कितने व्यक्ति लोग सहभागी होते हैं और अमल करते हैं।

हर प्रकार की हिंसा (शारीरिक, नस्लीय, धार्मिक, आर्थिक, लैंगिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक) का विरोध करना।

हिंसा का मतलब है दूसरों को क्षति पहुँचाना। यह क्षति शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक या मिला-जुला हो सकती है। हिंसा के विभिन्न रूप हो सकते हैं। जब एक व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाता है तो वह बाह्य हिंसा होती है। जब कोई खुद को नुकसान पहुँचाता है तो वह आंतरिक हिंसा होती है।

(“हिंसा के रूप” साहित्य से एक या अधिक मुद्दों को लें)

व्यक्तिगत और सामाजिक कार्य में अहिंसक रहना

जब एक व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाता है तब एक व्यक्ति अन्दर-बाहर से (जंजीर में) बंध जाता है। बाहर से लोगों की प्रतिक्रिया होती है जिसके परिणामस्वरूप पहले से भी अधिक या बराबर नुकसान पैदा होता है। आंतरिक नुकसान तब होता है जब दूसरों के प्रति की गई हिंसा हमें कटु, संवेदनहीन या अतिसंवेदनशील बना देती है और हम अपने दिलो-दिमाग की शांति खो बैठते हैं। हिंसा कभी भी अच्छा विकल्प नहीं बन सकती।

उसी प्रकार मानवतावादी आंदोलन समाज में बदलाव लाने के लिए सिर्फ अहिंसात्मक साधनों की वकालत करता है। हिंसा द्वारा लाए गए बदलाव सतही और अस्थायी होते हैं। इसके अलावा लोगों पर बदलाव लादना नहीं चाहिए क्योंकि हम नहीं चाहते कि लोगों के साथ हम इस तरह से पेश आएँ।

3. अतिरिक्त अध्ययन के लिए अध्ययन 2—मानव के केंद्रीय मूल्य और महत्व में रखना ‘India's Humanist Heritage’ by Fernando Garcia

सांस्कृतिक, रीतिरिवाज, जीवनशैली एवं विविधताओं का सम्मान करना।

मानवतावादी आंदोलन की नजर में सभी संस्कृतियों को बने रहने और विकास करने का अधिकार है। सांस्कृतिक विविधता एक संपत्ति है, समस्या नहीं। एक की संस्कृति को दूसरे पर लादना हिंसा है। यही बात रीतिरिवाजों, जीवनशैली, परंपराओं पर भी लागू होती है। हर संस्कृति में नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं का होना स्वाभाविक है। प्रत्येक संस्कृति को चाहिए कि वह अपने सकारात्मक पहलुओं को विकसित करे और नकारात्मक पहलुओं से ऊपर उठे। मानवतावादी आंदोलन का विचार है कि अच्छे काम के लिए विश्व की सभी संस्कृतियाँ एक साथ मिलकर काम करें। इसे "भूमंडलीय मानव राष्ट्र" कहते हैं और मानवतावादी आंदोलन की यही आकांक्षा है।

विचारों की स्वतंत्रता और लोगों की आस्था का समर्थन करना

मानवतावादी आंदोलन का एक सिद्धांत है कि— "...अगर आप किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं तो आप मुक्त रूप से जो चाहे कर सकते हैं" इसलिए हर किसी को अपनी इच्छानुसार सोचने और समझने का हक है, बशर्ते वे एक दूसरे का नुकसान न कर रहे हों। जब कोई बलपूर्वक या हिंसा या भेदभाव द्वारा अपने विचार या मान्यताएँ दूसरों पर लादता है तो वह नुकसान पहुँचाता है। किसी को भी अपने विचारों या मान्यताओं को दूसरों पर लादने का अधिकार नहीं है। दूसरी ओर समस्याओं, अज्ञात मुद्दों का हल ढूँढने के लिए विविध विचार और मान्यताएँ उपयोगी हो सकती हैं।

विचारों तथा काम के द्वारा सहमत होकर एक सुसंगत जीवन जीने का प्रयास करना।

जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छा और भावना के अनुसार काम करता है तो वह खुश रहता है और दूसरों को भी खुशी देता है। अपने विचारों और भावनाओं के साथ विश्वासघात करना बुरी बात है। जब हमारे विचार, भावनाओं और कार्य में कोई सहमति नहीं होती तो उसे "अंतर्विरोध" कहते हैं। यह बातें ऐसी हैं मानो तीन अलग-अलग बातें हमें तीन विभिन्न दिशाओं में खींच रही हों। ऐसा लगता है मानो हमारे टुकड़े-टुकड़े हो गए हों, हम फँस गए हों, हमें जहर दे दिया गया है, हमारा भविष्य में अंधेरा छा गया हो। अंतर्विरोध कम, अधिक या गंभीर हो सकता है अंततः यह बुरा होता है।

प्रमुख मानवतावादी विचार और सिद्धांत— "दूसरों के साथ तुम ऐसा व्यवहार करो जैसा कि अपने प्रति चाहते हो।"

यह विचार दुनिया की अनेक संस्कृतियों में विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया गया है। कभी-कभी इसे "सुनहरा नियम" कहते हैं। जब हम किसी के साथ जैसा आचरण करते हैं तो हम उससे अपने प्रति भी वैसा ही आचरण चाहते हैं। हम महसूस करते हैं कि हम एक मानव के रूप में बेहतर बनें तो हमारी खुशियाँ बढ़ जाएँगी और हम स्वयं को और दूसरों के साथ शांति से रख सकेंगे। यह सिद्धान्त मानवतावादी आंदोलन का आधार है। इसीलिए मानवतावादी आंदोलन समाज के विकास के लिए दूसरों के दुखों और यातनाओं से निजात दिलाने के लिए एवं परिस्थितियों के चलते दूसरों के दमन का शिकार हैं उनके लिए कुछ करना चाहता है। यह दूसरों को तकलीफ देने से बचने के लिए उत्तम साधन है। यह संकट में पड़े लोगों के लिए हमें कुछ करने का आह्वान करता है, ऐसी परिस्थितियों में हम भी सहायता की आशा रखते हैं।

सारांश : मानवतावादी आंदोलन गहन सिद्धांतों और विचारों पर आधारित है जिसकी नींव सिलो ने डाली थी। मानवतावादी आंदोलन में भाग लेने के लिए इसके सिद्धांतों को जानना तो जरूरी नहीं बल्कि सदस्यों को कम से कम इसके मूलभूत विचार को समझना चाहिए। क्योंकि वे सदस्यों और समाज के हित में हैं। इन्हें साप्ताहिक बैठकों, कार्यशालाओं और साहित्य के द्वारा थोड़ा-थोड़ा करके समझाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची—मानवतावादी विचार हम लिखित रूप में कहाँ पा सकते हैं?

मानवतावादी आंदोलन के मूलभूत विचार सिलो द्वारा लिखित पुस्तकें—

'To Humanize the earth', 'Letters to my friends', 'Guided Experience', 'Contribution to thought', 'Universal Rot Myths' इन विचारों के अध्ययन हेतु उपलब्ध है। अन्य लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकें — 'Interpretation of Humanism-salvatore Puledda, self liberation-Luis Ammann' मानवतावादी विचारों के लिए सहायक है।

कुछ विशेष समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, जानकारी पुस्तकें, कार्यवाही पुस्तिकाएँ, विषयों के स्पष्टीकरण इत्यादि के माध्यम से मानवतावादी आंदोलन की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तथा इसके अतिरिक्त अनेक दक्ष अक्ष फोटोग्राफ, वीडियो तथा सी. डी. (C. D.) भी उपलब्ध हैं।

व्यक्तिगत कार्य

प्रस्तावना—मानवीकरण का व्यक्तिगत कार्य क्या है?

मानवीकरण का व्यक्तिगत कार्य अभ्यासों तथा प्रस्तावों की व्यवस्था है जिसे सदस्य बैठकों में सीखते हैं और अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं। मानवीकरण का व्यक्तिगत कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिक प्रसन्न और मुक्त होने के लिए, और दूसरों के प्रति अच्छा काम करने के लिए, सदस्यों को उत्तम मानव बनना जरूरी है। मानवीकरण के व्यक्तिगत कार्य का अर्थ है "अपने जीवन को ऊपर उठाना और दूसरों के प्रति निःस्वार्थ कार्य काना"। इस अभ्यास से होनेवाले लाभ निम्नलिखित हैं—

- क) स्वयं में, दूसरों में, जीवन में तथा भविष्य के प्रति विश्वास पैदा होना।
- ख) स्वयं के सकारात्मक पहलुओं को मजबूत करना और नकारात्मक पहलुओं से छुटकारा पाना।
- ग) यह सीखना कि जीवन में सुख और स्वातंत्र्य कैसे बढ़ सकता है?
- घ) स्वयं के बारे में अपनी सोच बढ़ाना कि हम क्या चाहते हैं? हम कौन हैं? हम किस प्रकार व्यवहार करते हैं? आदि।
- ङ) दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना तथा उनके साथ अपने सम्बन्ध आदान-प्रदान कैसे अच्छे बनाना।
- च) जीवन का उद्देश्य क्या है? इसकी समझ बढ़ाना तथा जीवन को अधिक महत्वपूर्ण बनाना।
- छ) जीवन में शांति, आंतरिक शक्ति और आनंद पैदा करना।
- ज) स्वयं के आंतरिक संसाधनों के बल पर परिस्थितियों का सामना करने के लिए एक आंतरिक क्षमता विकसित करना।

संक्षेप में, मानवीकरण का काम पूरा करने के लिए यह सदस्यों को अधिक बुद्धिमान, अधिक उदार और अधिक सबल बनाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात है—मानवीकरण को जीवन मूल्यों के रूप में मजबूत करना।

मानवीकरण का व्यक्तिगत कार्य पूर्व निर्धारित विषयों तथा अभ्यासों के आधार पर होता है जो हमारे अधिकृत साहित्य से लिया जाता है।

व्यक्तिगत कार्य के प्राथमिक अभ्यास

आंतरिक मार्गदर्शक

अच्छा इंसान बनने के लिए व दूसरों के लिए अच्छा काम करने के लिए, व्यक्ति को सकारात्मक प्रेरणा देनेवाले सकारात्मक प्रतिरूपों, (मॉडेल्स) सकारात्मक उदाहरणों का अनुकरण करना पड़ता है। गलत नमूने अच्छे आचरण की प्रेरणा वही देते। ऐसे लोग, आध्यात्मिक चीजें, काल्पनिक चीजें, ऐतिहासिक चरित्र इत्यादि जिनके भीतर विवेक, दयालुता और आंतरिक शक्ति भरी होती है, वे सर्वश्रेष्ठ प्रतिरूप होते हैं। हम उन्हें प्रेरणा और संदर्भ के स्रोत के रूप में ग्रहण करते हैं तो हम भी बुद्धिमान, दयावान और शक्तिशाली बन जाएँगे। प्रत्येक को अपना व्यक्तिगत प्रतिरूप चुनना होता है। हमें अपने चुने हुए नमूने के साथ अपना दैनिक रिश्ता बनाना है, जिसे हम आमतौर पर आंतरिक मार्गदर्शक कहते हैं। अपने आंतरिक मार्गदर्शन से हम उन विषयों के बारे में पूछ सकते हैं जिसकी हमें सबसे ज्यादा जरूरत है—शांति, आंतरिक बल, आनन्द, सुरक्षा एवं मार्गदर्शन। दैनिक जीवन में हम अपने आंतरिक मार्गदर्शक के उदाहरण का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं।

मार्गदर्शित अनुभव (आंतरिक मार्गदर्शक के साथ कोई चार-परिशिष्ट देखें है)

आंतरिक मार्गदर्शक से पूछने का अभ्यास—"आइए शिथिल हो जाएँ, अपनी आँखें बंद करें और अपने आंतरिक मार्गदर्शक की मौजूदगी को महसूस करें। आपमें से कुछ लोग आंतरिक मार्गदर्शक को अपने विचारों में देखते हैं, कुछ लोग ऐसी संवेदना महसूस करेंगे मानो आपका आंतरिक मार्गदर्शक मौजूद हो और आपमें से कुछ लोग अपने आंतरिक मार्गदर्शक की आवाज भी सुनेंगे।... (मौन) सबकुछ अच्छा है और आंतरिक मार्गदर्शक की मौजूदगी हमें शांति, आंतरिक बल और आनंद का एहसास कराती है... (मौन) अब अपने अंतर्मन और दिल की गहराईयों को आंतरिक मार्गदर्शक से पूछिए कि इस पल में आप सबसे महत्वपूर्ण कौन सी चीज चाहते हैं... (मौन) अपने आंतरिक मार्गदर्शक को धन्यवाद दें

और यह विश्वास रखें कि आंतरिक मार्गदर्शक सदैव आपकी देखभाल करेगा... (मौन) आप अपनी आँखें खोल सकते हैं।”

यथार्थ-कार्य

हमारा मानवतावादी कार्य हमारे आसपास के लोगों के लिए सकारात्मक ही होना चाहिए, स्वयं के लिए भी सकारात्मक होना चाहिए। दैनिक जीवन में हमारे कार्य या तो हमें और हमारे आसपास के लोगों को नुकसान पहुँचा सकते हैं या हमें और हमारे आसपास के लोगों को खुशी और आजादी दे सकते हैं। हमें और हमारे आसपास के लोगों को खुशी और आजादी देनेवाले कार्यों को हम अपने खुद के अनुभव से पहचान सकते हैं और इस बात को अपने खुद के अनुभव से सीखना महत्वपूर्ण है, न कि महज किसी के कहने से। इसकी मुख्यतः तीन विशेषताएँ हैं—

- अ) हम जो सोचते हैं, महसूस करते हैं वह सहमति और सांमजस्य से होता है। हमारे विचारों या एहसासों में धोखाधड़ी का कोई स्थान नहीं होता।
- ब) कार्य करने के बाद हम महसूस करते हैं कि एक मानव के रूप में हमारा सुधार हुआ है। हम महसूस करते हैं कि हम पहले से भी अच्छे इंसान हो गए हैं।
- क) कार्य के बाद कोई पश्चाताप या अनुताप नहीं होता है—हम इससे मुक्त रहते हैं। हम इसे अनेक बार दोहराएँगे। श्रेष्ठ कार्य, ही यथार्थ कार्य हैं।

चर्चा—क्या आपने कभी इस प्रकार के कार्य का अनुभव किया है? क्या आपने कभी इस तरह के कार्य पूरे किए हैं। वह क्या था? आपने क्या सोचा था? आपने कैसा महसूस किया? सर्वश्रेष्ठ यथार्थ कार्य वह है जिसमें आप दूसरों के साथ उसी तरह का व्यवहार करते हैं, जैसाकि आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं। यह मानवतावादी आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है—“दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा तुम अपने प्रति चाहते हो।” यह सिद्धांत समझाता है कि मानवतावादी आंदोलन के सदस्य दूसरों के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते हैं—क्योंकि हम चाहते हैं कि दूसरे लोग भी इसी तरह से हमारे साथ बर्ताव करें और ऐसे कार्य से हमें खुशी और आजादी का एक गहरा एहसास प्राप्त होता है।

मानवतावादी आंदोलन के यथार्थ कार्य के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

शांति का अनुभव

कभी—कभी दैनिक जीवन के दबाव के कारण हम अपने मन और दिल की शांति खो बैठते हैं। हमारे भीतर शांति नहीं होगी तो हम दूसरों के लिए शांति नहीं ला सकते। हम मानवीकरण का अपना कार्य ठीक से नहीं कर सकते। इसलिए अपने मन और दिल की शांति खो बैठने पर हमें उसे फिर से हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। शांति के अनुभव का अर्थ इसलिए है। यह हमें अपने आंतरिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करता है। शांति का अनुभव पाने के लिए पहले हमें थोड़ा शिथिल होना पड़ेगा।

सरल शिथिलीकरण (समझाना, अभ्यास करना, चर्चा करना) (देखें परिशिष्ट)

शांति का अनुभव (अभ्यास)

अब अनुभव को सरल बनाने के लिए, आँखें बंद करके एक छोटी कहानी की कल्पना करें कि मैं क्या पढ़ूँगा और इसके लिए शांति का अनुभव करें।

मार्गदर्शित अनुभव—“शांति का कुँआ” (शांति का कुँआ के लिए देखें परिशिष्ट)

आपकी पहली साप्ताहिक बैठक में अपने सदस्यों के साथ शांति का अनुभव शामिल होना चाहिए (एक आधार के रूप में मार्गदर्शिता अनुभव के साथ या इसके बिना)

जीवन का अर्थ

हमारे लिए जीवन का अर्थ महत्वपूर्ण विषय है। जब हम यह महसूस करते हैं कि हमारी जिंदगी का एक अर्थ है, एक उद्देश्य है, तो हम अच्छा महसूस करते हैं। हम यह भी महसूस करते हैं कि हमारी जिंदगी का कोई अर्थ नहीं है, कोई उद्देश्य नहीं है, तब हम बुरा महसूस करते हैं। जब हमारे जीवन का अर्थ सकारात्मक होता है—तब हम अपने तथा दूसरों के प्रति अच्छा काम करते हैं। जब हमारे जीवन का अर्थ नकारात्मक होता है, तब हम अपने आपको तथा दूसरों को

यातना देते हैं और नुकसान करते हैं। जब हमारे जीवन का अर्थ सतही और कामचलाऊ होता है, तब हमारी खुशी भी भय और असुरक्षा के साथ-साथ सतही और कामचलाऊ होती है। हमारे जीवन का अर्थ गहन और स्थायी होता है तब हमारी खुशी भी भय तथा असुरक्षा के बगैर मजबूत और स्थायी होती है। हमारे जीवन के अर्थ को लादा नहीं जा सकता, यह ऐसी चीज है जिसे हमें मुक्त रूप से खोजना चाहिए और जिससे हमें प्यार करना चाहिए।

सारांश

आपके पास अच्छा मानव तथा उत्तम मानवतावादी बनने के लिए तीन प्राथमिक साधन हैं—आंतरिक मार्गदर्शक, आंतरिक आधार तथा प्रेरणा। यथार्थ कार्य आपके भीतर तथा आपके आसपास के लोगों के भीतर खुशी तथा आजादी विकसित करने के लिए आपको कार्य की सर्वश्रेष्ठ दिशा तय करने में मदद करेगा। शांति का अनुभव आपके मन और दिल की शांति को फिर से प्राप्त करने का संसाधन है, जिसे आप आवश्यकता के समय बढ़ा सकते हैं। प्राथमिक साधन आपको न सिर्फ ज्यादा खुशी देगा बल्कि आपको अधिक स्वतन्त्रता देगा। अंततः जीवन के अर्थ के बारे में हमारी चर्चा एक मौलिक विषय पर आधारित प्रतिक्रिया है।

कार्य पद्धति

जैसाकि हम पहले कह चुके हैं कि, सभी क्षेत्रों के मानवीकरण की आवश्यकता है, मानवतावादी आंदोलन अपने सदस्यों की रुचि के अनुसार सभी क्षेत्रों में कार्य करता है। इसलिए विविध क्षेत्रों में अलग-अलग तरीके से सामाजिक मानवीकरण का कार्य किया जाता है, हर कोई अलग-अलग तरीके से दुनिया के मानवीकरण में अपना योगदान देता है। यहाँ पर हम उन विशिष्ट गतिविधियों में से किसी पर चर्चा करने नहीं जा रहे हैं। हम कुछ प्राथमिक विशेषताओं का सिर्फ स्पष्टीकरण देना आवश्यक समझते हैं जो सभी सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं, भले ही वह मानवीकरण की किसी भी गतिविधि को अमल में ला रहे हों।

साप्ताहिक बैठक—ये हमारे संगठन और गतिविधियों के निर्माण का ढाँचा हैं। साप्ताहिक बैठकों के बिना प्रगति और कार्य क्षमता घट जाती है। साप्ताहिक बैठक सप्ताह में एक बार, आयोजित की जाती हैं। मानवतावादी दृष्टिकोण के ध्यान में रखते हुए समय और स्थान में परिवर्तन किया जा सकता है।

परिषद बैठक—सभी अनुस्थापक, अनुस्थापक दल का हिस्सा होते हैं। इसे परिषद कहते हैं। यह परिषद भविष्य की प्रगति के लिए वर्तमान स्थिति तथा योजना का मूल्यांकन करता है। समूहगत कार्य संगठन की मौलिक अवधारणा तथा प्रत्येक सदस्य का सही नजरिया होता है। परिषद की बैठक तीन महीने के अन्तराल पर होती है।

सूचना

वर्तमान मौजूदा स्थिति को जानने तथा भविष्य की योजना बनाने के लिए सही सूचना अत्यावश्यक है। सही सूचना का न होना, कमजोर संगठन समूह के रूप में काम करने की अनिच्छा आदि एक संकेत है।

सदस्यता फॉर्म—यह प्रत्येक सदस्य की न्यूनतम मूल्यांकन सूचना है। इससे हमें सदस्यों के प्रकार को समझने तथा उसके अनुसार योजना बनाने में मदद मिलती है।

संवाद—सदस्य अपने अनुस्थापकों, समकक्ष व्यक्तियों तथा अनुस्थापन दिए जानेवाले सदस्यों के साथ नियमित संवाद बनाए रखते हैं। यह काम अलग-अलग साधनों से किया जाता है।

संचयन—संगठन की गतिविधियों को बरकरार रखने के लिए प्रत्येक सदस्य भौतिक योगदान देता है। योगदान आय के अनुपात से तय होता है। योगदान का न मिलना यह दर्शाता है कि सदस्यों में उचित समन्वय व एकता नहीं है।

अनुस्थापक—कोई भी सदस्य स्वच्छंद नहीं होता। प्रत्येक सदस्य एक संगठित दल का हिस्सा होता है उसे अपनी गतिविधियों के लिए दिशा निर्देशित किया जाता है। अनुस्थापक आन्दोलन की गतिविधियों को दिशा-निर्देश देता है।

स्पष्टीकरण—सदस्यों को सैद्धांतिक तथा सांगठनिक मामलों के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास के कार्यों के बारे में उचित जानकारी न मिले तो एक मानवतावादी के रूप में उनका विकास नहीं हो पाता है।

संयुक्त कार्यवाही—इसका अर्थ है कि—संयुक्त प्रयासों के द्वारा महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करना, यह कार्य सदस्यों की भीड़ माना से ही नहीं होता।

मानवतावादी केन्द्र—मिलने की जगह, जहाँ पर मानवतावादी मिलते हैं तथा गतिविधियों को संयोजित करते हैं और यह पड़ोसियों के लिए एक संदर्भ स्थान है। इसके बारह एक बोर्ड लगा होता है—मानवतावादी केंद्र और जिस पर गाँव, मुहल्ला, नगर का नाम लिखा होता है।

समाचार पत्र—एक सरल सा प्रकाशन जिसमें मानवतावादी गतिविधियाँ, समाचार, सूचना, घोषणा आदि की जानकारी दी जाती है, यह सभी सदस्यों तथा शुभचिन्तकों को पढ़ने के लिए दिया जाता है।

परिशिष्ट

मानवतावादी आंदोलन क्या है?

मानवतावादी आंदोलन लोगों का एक संगठित समूह है जो लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देता है जिससे वे अपने तथा आसपास के लोगों की स्थिति को बदल सकें। समाज में तथा लोगों के बीच अधिकतर समस्याओं की मुख्य जड़ है विभाजन—इसलिए लोग एकजुट हो जाएँ तथा मिलकर काम करें तो उनकी अधिक से अधिक समस्याएँ हल हो सकती हैं।

दूसरे संगठन भी लोगों को एकजुट करते हैं, परन्तु असर अपने स्वार्थ तथा दूसरों के विरोध में। मानवतावादी आंदोलन सबके साथ और सबके लिए निःस्वार्थ कार्य करने हेतु लोगों को एकजुट करता है। मानवतावादी आंदोलन के सदस्य जाति, पंथ, लिंग, सामाजिक दर्जा आदि के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं। मानवतावादी आंदोलन सबके साथ और सबके लिए काम करता है। हमारे देश की अधिकतर समस्याएँ विभाजन के कारण से हैं इसे दूर करने का एकमात्र रास्ता है—एक आम बैनर तले लोगों को एकजुट करने और वो आम बैनर है—एक अनोखा भारत, मानवीय भारत। कुछ लोग बड़ी सरलता से यह मान बैठते हैं कि वे अकेले ही अपनी समस्याओं को हल कर लेंगे, लेकिन हम सब लोग आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारा देश तभी प्रगति करेगा जब हम सब बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करेंगे। दूसरी तरफ यह बात स्पष्ट है कि अकेले दम पर बहुत कम काम होता है, साथ मिलकर काम करने से हम ज्यादा प्रभावशाली हो सकते हैं। हमारे देश को एक दूसरे स्वतंत्रता संघर्ष की जरूरत है, जैसे—निरक्षरता, बीमारी, कुपोषण, भ्रष्टाचार, मूलतत्त्ववाद, उदासीनता इत्यादि को नष्ट करने के लिए संघर्ष।

मानवतावादी आंदोलन, विश्व के मानवीकरण तथा भारत के मानवीकरण के आम लक्ष्य को लेकर साथ मिलकर काम करनेवाले व्यक्तियों तथा संगठनों का एक आम मंच है। यह अपना काम स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता के क्षेत्र से शुरू करता है, लेकिन इसका लक्ष्य है एक एकीकृत सामाजिक, सांस्कृतिक और मनावैज्ञानिक अहिंसक क्रांति करना।

अगर आप मानवतावादी आंदोलन का हिस्सा बनने का निर्णय लेते हैं तो आप अपनी मौजूदा पहचान तथा गतिविधियों में से कुछ भी नहीं छोड़ेंगे, बल्कि आप इसमें सुधार करेंगे और इसका विस्तार करेंगे। फिर भी हमारी संयुक्त जिम्मेदारियों को आधार की जरूरत है और मानवतावादी आंदोलन अपने अनुस्थापन के साथ आपकी गतिविधियों, सांगठनिक जानकारी, महत्वपूर्ण मुद्दों पर स्पष्टीकरण और एक व्यापक सूचनातन्त्र में संसाधनों को आपस में बाँटने के मामले में आपको समर्थन देगा।

उपर्युक्त में जिन बातों का उल्लेख किया गया वे खोखली व नारेबाजी नहीं है, बल्कि वर्षों से किया जानेवाला काम है। इन सब चीजों के लिए संगठन और स्थायी काम की जरूरत पड़ती है। ढीले संपर्क तथा कभी-कभार की गतिविधियों से काम नहीं चलेगा। उपर्युक्त उल्लेखित बातों को सिद्धान्त या विचारधारा के रूप में नहीं कहा गया बल्कि दैनिक जीवन में वास्तविक रूप से लागू करने की बात कर रहे हैं। हम अपनी बात को महज एक सिद्धान्त या विचारधारा के रूप में पेश नहीं कर रहे हैं, बल्कि समाज में और दैनिक जीवन में वास्तविक रूप से इसे लागू करने की बात कर रहे हैं।

मानवतावादी स्वः धार परियोजना—मानवतावादी केंद्र

मानवतावादी आंदोलन की गतिविधियों को “मानवतावादी स्वःधार परियोजना” को लागू करते हुए भी शुरू किया जा सकता है। लोग अपने पैरों पर खड़े हों, एक साथ आँ खुद को संगठित करें, अपनी आम जरूरतों को हल करें व अपनी परिस्थिति को बदलें—एवम् गाँव, झोपड़पट्टी इलाकों या मुहल्लों का मानवीकरण करें।

परियोजना का उद्देश्य है स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता के क्षेत्र से जुड़े कई पहलुओं पर काम शुरू करते हुए गाँव, या झोपड़पट्टी इलाके का विकास करना। इन जगहों पर पहले से मौजूद संगठन अपनी पहले से चल रही गतिविधियों को जारी रखते हुए तथा अपनी पहचान को खोये बगैर “मानवतावादी स्वःधार परियोजना” में शामिल हो सकते हैं। मानवतावादी आंदोलन उनकी गतिविधियों को ज्यादा प्रभावशाली तथा व्यापक बनाने के लिए आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएगा।

परियोजना की शुरुआत मानवतावादी केंद्र के गठन के साथ होती है जो कि लोगों के मिलने की जगह के अतिरिक्त इसमें रुचि रखनेवाले लोगों की सभा तथा उनकी संयुक्त परियोजना भी होती है।

स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता के क्षेत्र से जुड़े पहलुओं को सुलझाने के लिए समितियों का गठन किया जाता है।

सभी समितियाँ मानवतावादी आंदोलन के संगठित सदस्यों द्वारा जुड़ी और संयोजित होती हैं। प्रत्येक सदस्य जन कल्याण के लिए अपने खाली समय के दौरान स्वयंसेवा करते हुए स्वयंसेवी आधार पर काम करता है। प्रत्येक सदस्य मानवतावादी आंदोलन के समवाद, समन्वय और विस्तार की आम गतिविधियों के लिए तय की गई धनराशि में भी योगदान करता है। वह मानवतावादी आंदोलन को समर्थन देता है, मानवतावादी आंदोलन अनुस्थापन, संगठन, साहित्य, मीटिंग, पत्र-व्यवहार, भेंट देना आदि के माध्यम से आन्दोलन की सहायता करता है (आदान-प्रदान, गैर-धर्मादाय)

प्रत्येक सदस्य किसी न किसी गतिविधि का प्रभारी होता है वह दूसरे सदस्यों तथा सहयोगियों का भी प्रभारी होता है। यानी हरेक सदस्य दूसरों के प्रति जिम्मेदार होता है। इस तरह से हर सदस्य जो कुछ भी "पाता है उसे दूसरों को देता है" (बहुगुणता)।

प्रत्येक सदस्य समिति का एक महत्वपूर्ण अंग होता है।

गतिविधियों का लाभ उन्हें मिलता है जो एक दूसरे के लिए काम करते हैं जो गतिविधियों के आयोजन में सहभागी होते हैं (गैर पैतृकवाद, गैर दानशीलता)।

प्रत्येक सदस्य से यह आशा की जाती है और उसे प्रोत्साहित किया जाता है कि वह जिस गतिविधि में सम्मिलित है उसे आयोजित करने के लिए वह पहल करे और उसमें सक्रियतापूर्वक भाग ले (गैर-पैतृकवाद)।

प्रत्येक सदस्य साप्ताहिक बैठकों में नियमित रूप से भाग लेगा, जहाँ पर वह व्यक्तिगत मानवीकरण के विषय में तथा समाज के मानवीकरण के बारे में सीखेगा। उस साप्ताहिक मीटिंग में सदस्य कमीटियों की गतिविधियों का मूल्यांकन एवं समन्वय करते हैं तथा योजना बनाते हैं (संगठित कार्य, विकास की प्रक्रिया)। कमीटियों की नियमित गतिविधियों के साथ-साथ साप्ताहिक मीटिंग मानवतावाद का प्रशिक्षण ले रहे प्रत्येक सदस्य का एकीकृत भाग है। अपनी गतिविधियों के लिए प्रत्येक समिति अपने सदस्यों से, सरकारी विभागों से, दानकर्ताओं से, बदलें इ. के चंदे से अपना धन जुटाती है। कभी-कभी मानवतावादी आंदोलन के व्यापक ने सूचनातन्त्र से अतिरिक्त संसाधन जुटाए जा सकते हैं। कमीटी द्वारा जुटाई गई आर्थिक सहायता तथा संसाधन उस कमीटी के पास रहते हैं। मानवतावादी आंदोलन की संरचना के समन्वय, संवाद और विस्तार के लिए संरचना द्वारा एकत्रित किया गया धन चार भागों में बाँटा जाता है उसे मानवतावादी आंदोलन की अलग-अलग परिषदों के अनुसार वितरित किया जाता है (देखें सांगठनिक चार्ट)।

सभी स्थानीय संरचनाएँ और सदस्य मानवतावादी आंदोलन का अंग होते हैं, शेष मानवतावादी आंदोलन के साथ अपनी गतिविधियों का समन्वय करते हुए अनुस्थापन का अनुकरण करते हैं। मूलरूप से हर जगह की मानवतावादी स्व:धार परियोजना सक्रिय रूप से शामिल सदस्यों की संख्या और अपनी गतिविधियों के संगठन के अनुसार परिणाम प्राप्त करती है। विभिन्न स्थानों के परिणाम सदस्यों द्वारा एक संयोजित तरीके के साथ मिलकर की गई संयुक्त गतिविधियों पर निर्भर रहेंगे।

साप्ताहिक बैठकों के मध्य मानवतावादी गठन

मानवतावादी आंदोलन के सिद्धांत और विचारधारा पर स्पष्टीकरण

सदस्यों को साप्ताहिक बैठक, कार्यशालाओं शिविरों के दौरान तथा मानवतावादी आंदोलन के साहित्य के जरिए मानवतावादी आंदोलन के प्रमुख विचारों का स्पष्टीकरण दिया जाता है। यह अवधारणा महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब सदस्यगण विविध मुद्दों के बारे में जानते रहते हैं और उन पर मानवतावादी एक भूमिका अपनाते हैं तब कार्यवाही में सुधार होता है।

सरल रचनात्मक सिद्धांत

परिचय—साप्ताहिक बैठकों के बीच में मानवतावादी सिद्धांत और विचारधारा का परिचय कराने हेतु निम्नलिखित रचनात्मक सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है। इन रचनात्मक सिद्धांतों के परिचय में सारी बातों का स्पष्टीकरण नहीं किया जा सकता तथा मानवतावादी विचारों को गहनता और सूक्ष्मता से व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी मानवतावाद का क्ख्ग जानने तथा इसकी व्याख्या और विभेदीकरण को समझाने के लिए यह एक अच्छी शुरुआत हो सकती है। महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सदस्यों के बीच सक्रिय चर्चा होनी चाहिए, विषयों को अपनी तरह से व्यक्त करते हुए, रोजाना की जिंदगी के बारे में उदाहरण देते हुए आदि के द्वारा स्पष्टीकरण में अपना योगदान देगी। हम मानवतावादी सिद्धांत और विचारधारा में अपने सदस्यों के गठन के महत्व पर अधिक जोर नहीं दे सकते। इसे अनदेखा करने का अर्थ है हमारी गतिविधियों को उन संदर्भों की दया पर छोड़ देना जो अमानवीकरण कर रही हैं या अमानवीकरण का मुकाबला कर पाने में असमर्थ हैं।

विषयों को अपनी सुविधानुसार किसी भी क्रम में ग्रहण किया जा सकता है। मानवतावादी आंदोलन के साहित्य में अन्य विषयों को तलाशा जा सकता है।

मानव को केंद्रीय मूल्य और महत्व में रखना

किसी भी चीज से ज्यादा महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। लोग धन, सत्ता, राजनीति और किसी भी अन्य चीज से ज्यादा महत्ता रखते हैं। प्रत्येक वस्तु लोगों को ज्यादा खुशी और आजादी प्रदान करने की सेवा में होना चाहिए।

कोई भी वस्तु लोगों को खुशी और आजादी देती है तो वह अच्छी है। यद्यपि लोगों को यातना देती है उनका दमन करती है तो वह खराब है। क्या अच्छा और क्या बुरा है? इसका लोगों को मुक्त रूप से चुनाव करने देना चाहिए परन्तु लोगों पर लादना नहीं चाहिए।

अच्छा वह है जो लोगों को जोड़ता है; बुरा वह है जो उन्हें तोड़ता है।

हम विभाजित रहेंगे तो हमारी समस्याएँ भी ज्यादा होंगी। हम एकजुट रहेंगे तो हम अपनी समस्याओं को हल कर सकेंगे। प्रत्येक व्यक्ति को संगठित रहना चाहिए उसके विचार, उसकी भावनाएँ और उसके कार्य में सहमति होनी चाहिए। परिवारों को संगठित होना चाहिए। गाँव या शहर को संगठित होना चाहिए। देश को एक साथ संगठित होना चाहिए। सम्पूर्ण जगत को संगठित होना चाहिए। यह एकता सहमति पर आधारित होनी चाहिए न की बलपूर्वक लादी गई हो। वह क्या चीज है जो हमें संगठित करती है? वह क्या चीज है जो हमें विभाजित करती है?

अच्छा व्यक्ति कौन है?

अच्छा व्यक्ति वह है जो दूसरों के साथ उसी तरह का बर्ताव करता है जैसा वह स्वयं के प्रति चाहता है। अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने आपको एक मानव के रूप में विकसित करता है और एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश करता है। अच्छा व्यक्ति वह है जो दूसरों की उन्नति के लिए उनकी न सिर्फ भौतिक रूप से मदद करता है, बल्कि एक मानव के रूप में भी एक अच्छा मानव बनने के लिए सहायता करता है। अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने आसपास के लोगों को प्रसन्न और मुक्त बनाता है।

आंतरिक मार्गदर्शक

एक अच्छा व्यक्ति बनने के लिए और दूसरों के लिए अच्छा काम करने के लिए एक सकारात्मक प्रतिरूप, सकारात्मक उदाहरणों का अनुकरण करना पड़ता है। गलत उदाहरणों से गलत आचरण की प्रेरणा मिलती है। सर्वश्रेष्ठ उदाहरण वो लोग (जीवित या मृत), आत्माएँ, काल्पनिक लोग, ऐतिहासिक चरित्र होते हैं जिनमें प्रचुर बुद्धिमानी, दयालुता और आंतरिक शक्ति होती है। हम उन्हें प्रेरणा या संदर्भ के स्रोत के रूप में ग्रहण करें तो हम प्रगतिशील रूप में उनके जितना बुद्धिमान, दयालु तथा शक्तिशाली बन सकते हो। किसी को अपना व्यक्तिगत मॉडेल चुनना होता है। हमें अपने चुने हुए मॉडेल के साथ एक दैनिक रिश्ता रखना शुरू करना पड़ता है, और इस प्रतिरूप को हम आमतौर पर आंतरिक मार्गदर्शक कहते हैं। अपने आंतरिक मार्गदर्शक से हम वे चीजें माँग सकते हैं जिनकी हमें सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है—शांति,

आंतरिक बल, आनंद, सुरक्षा, मार्गदर्शन, साहचर्य। अपने दैनिक जीवन में हम अपने आंतरिक मार्गदर्शक के उदाहरण का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। हम इस विषय की चर्चा करें और अपने आंतरिक मार्गदर्शक का चुनाव करें।

हमारी सकारात्मक विशेषताएँ

हम पर जो हमेशा हावी रहना चाहते हैं और सिर्फ हमारी नकारात्मक विशेषताओं की तरफ उंगली उठाते हैं, वो हमें बताते हैं कि हम निकृष्ट हैं, क्योंकि उनके हिसाब से हम जवान या बूढ़े, विवाहित या अविवाहित पुरुष या स्त्री, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, किसी भी धर्म सम्प्रदाय के हो सकते हैं। हम केवल अपनी कृतियों को देखें और समझे, स्वयं को छोटा महसूस करें तो हम पर हुकूमत जमाना आसान है। हमें अपने सकारात्मक गुणों को बनाए रखना है। जवान, बूढ़े, विवाहित, अविवाहित, पुरुष-स्त्री, अनुसूचित जाति, अमीर-गरीब, अन्य सभी सकारात्मक प्राणियों में गुण होने आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक मानव के रूप में हमारे सकारात्मक गुण क्या होने चाहिए।

उनकी सकारात्मक विशेषताएँ

सभी मनुष्यों के साधारण व असाधारण दोनों बातें होती हैं। हम दूसरों में केवल दोष ढूँढने की कोशिश करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप घृणा उत्पन्न होने लगती है। इसी घृणा के बने रहने तक पास-पड़ोस का वातावरण भी घृणात्मक प्रवृत्तियों में बदलने लगता है। यदि हम मनुष्य को अपनी सकारात्मक दृष्टि से मूल्यांकित करें तो परिणाम स्वरूप हम सभी में आनन्द का अनुभव होता है। इससे हमारे आस-पास के व्यक्ति अपनी घृणात्मक प्रवृत्तियों को छोड़कर, सभी से परस्पर मिलने लगेंगे। साथ ही साथ हम संगठित होंगे, व किसी भी उद्देश्य को मिलकर पूरा कर सकेंगे।

मानवतावादी कौन है?

जो दूसरों के साथ समान मान मर्यादा सहित एक मानव की तरह व्यवहार करता है। जो यह मानता है कि धन-संपत्ति, जाति, उम्र, लिंग-भेद, धर्म, राजनीति, सबसे महत्वपूर्ण चीजें नहीं हैं। जो यह मानता है कि मानव जीवन, खुशी और आजादी, अन्य चीजों से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। जो यह मानता है कि सभी मानव को समान अवसर मिलने चाहिए। जो किसी भी भेदभाव का विरोध करता है, जो हर तरह की हिंसा का विरोध करता है, जो दूसरों के साथ उसी तरह का व्यवहार करता है जैसा वह अपने प्रति चाहता है, जो समाज और व्यक्ति में समूचा बदलाव लाने के लिए काम करता है वह व्यक्ति हिंसा और भेदभाव के स्रोत को जड़ से उखाड़ फेंक सकता है।

वर्तमान परिस्थिति

दुनिया तेजी से बदल रही है। कुछ बदलाव अच्छे हैं, जबकि कुछ खराब हैं। इस तरह के बदलाव के साथ तालमेल स्थापित करना मुश्किल होता जा रहा है। समाज उम्र, जाति, पंथ, लिंग, संपत्ति, राजनैतिक पार्टियों, भाषा आदि के अनुसार विभाजित हो गया है। इसी कारण अल्पसंख्यक लोग अपने स्वार्थ के लिए हमारे ऊपर शासन कर रहे हैं। पुराने निदान अब किसी काम के नहीं हैं, अकेला नेता या संगठन समस्याओं को हल नहीं कर सकता। समस्याओं को जड़ से हल करने का एक मात्र तरीका है संगठित होना और साथ मिलकर काम करना।

जीने की परिस्थितियाँ

किन परिस्थितियों में हम जीना चाहते हैं? हम अपने, अपने परिवार और अपने समुदाय के भविष्य के लिए क्या चाहते हैं? हम कौन सी चीजें नहीं चाहते? क्या हम इसके लिए काम करने को तैयार हैं? क्या हम इसके लिए साथ मिलकर काम करने को तैयार हैं? यदि हाँ तो हमें सभी को साथ चलना होगा।

मानवतावाद और मानववाद (सापेक्षित सुधार और वास्तविक परिवर्तन)

भूखों को भोजन देना एक अच्छा (मानवीय) कार्य है, कोई भी व्यक्ति भूखों न रहें इसलिए समाज को बदलना एक मानवतावादी काम है। किसी को पढ़ना-लिखना सिखाना एक अच्छा काम है, समाज में कोई भी निरक्षर न रहे, एक मानवतावादी काम है। किसी की आवश्यकताओं को पूरा करना एक अच्छा काम है, समाज को बदलना ताकि उसे हमारी जरूरत न पड़े एक मानवतावादी काम है। लोगों की बुनियादी जरूरतों को सिर्फ जरूरत समझकर उसका समाधान करना एक अच्छा काम है, लोगों की जरूरतों को एक मौलिक अधिकार समझकर उनको मान्यता दिलाने के लिए संघर्ष करना एक मानवतावादी काम है।

आदान-प्रदान

मानवतावादी आंदोलन मुझे साहस प्रदान करता हूँ मैं भी मानवतावादी आंदोलन सुदृढ़ एवम् संगठित बनाने का

प्रयास करता हूँ। मानवतावादी आंदोलन को शक्ति प्रदान करने के लिए मैं प्रस्तावित गतिविधियों को अमल में लाता हूँ, मानवतावादी आंदोलन का प्रसार करता हूँ व अपने द्वारा जुटाए गए चंदे द्वारा योगदान करता हूँ।

मानवतावादी आंदोलन उनको आधार देता है जो मानवतावादी आंदोलन को सम्बल प्रदान करते हैं। मानवतावादी आंदोलन कोई धर्मादाय संगठन नहीं है न ही यह गैर सरकारी संगठन है।

बहुगुणता

मानवतावादी आंदोलन हमें स्वार्थी बनना नहीं सिखाता। मैं जो कुछ भी मानवतावादी आंदोलन से हासिल करूँ उसे सिर्फ मेरे पास ही नहीं रहने देना चाहिए। मानवतावादी आंदोलन से मुझे जो कुछ भी मिलता है उसे मैं अपने आस-पास के लोगों को देता हूँ। हम सभी ऐसा ही कार्य करें जिससे अधिक से अधिक व्यक्ति मानवतावाद के लिए काम करेंगे और हम सभी के लिए मानवतावाद और भी सरल हो जाएगा।

गैर-पैतृकवाद

मानवतावादी आंदोलन अपने सदस्यों को यँ ही (चम्मच में भरकर) सब कुछ नहीं देता बल्कि सदस्यों को अपनी विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष साधन जुटाने की दिशा में काम करना होगा। मानवतावादी आंदोलन केंद्रीयता व निर्भरता को प्रोत्साहन नहीं देता बल्कि विकेंद्रीकरण तथा स्वावायत्तता को बढ़ावा देता है। मानवतावादी आंदोलन चाहता है कि उसके सदस्य अपने स्वयं के संसाधनों के बल पर आगे बढ़ें और विकास करें। एक बार सदस्य बन जाने पर लोग मानवतावादी आंदोलन का हिस्सा बन जाते हैं।

यथार्थ कार्य

मानवतावादी कार्य हमारे आस-पास के लोगों के लिए सकारात्मक तो होने ही चाहिए, लेकिन वे हमारे लिए भी सकारात्मक होने चाहिए। दैनिक जीवन में हमारी गतिविधियाँ हमारे आस-पास के लोगों को या तो नुकसान पहुँचा सकती हैं या हमें और हमारे आस-पास के लोगों को खुशी और आजादी दे सकती हैं। हमें और हमारे आस-पास के लोगों को खुशी तथा आजादी प्रदान करनेवाली चीजों को हम अपने अनुभव से पहचान सकते हैं व इस बात को अपने खुद के अनुभव से सीखना महत्त्वपूर्ण है। यथार्थ कार्य की तीन विशेषताएँ हैं—

अ) हम जो सोचते हैं, महसूस करते हैं और करते हैं वह सहमति तथा सामंजस्य ये होता है। हमारे विचारों या कार्यों में धोखाघड़ी की कोई भावना नहीं होती है।

ब) कार्य करने के बाद हम महसूस करते हैं कि एक मानव के रूप में हमारा सुधार हुआ है। हम अनुभव करते हैं कि हम पहले से अच्छे इंसान बने हैं।

स) हमारे काम के बाद कोई दुःख या पछतावा नहीं होता—हम इससे मुक्त रहते हैं। व अनेक बार इस उदाहरण को प्रस्तुत कर सकते हैं। यथार्थ कार्य, की तीनों विशेषताएँ तर्क संगत है।

दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम उनसे अपने प्रति चाहते हो।

मानवतावादी आंदोलन का मुख्य सिद्धांत है—“दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा व्यवहार तुम उनसे अपने प्रति चाहते हो।” मानवतावादी आंदोलन कोई धर्म नहीं है, बल्कि इसके मुख्य सिद्धांत सभी धर्मों से सहमति रखते हैं।

उदहरणार्थ हिंदूधर्म कहता है—“धर्म का यही सार है—जो कर्म तुम्हें दुःख दे, वह कर्म दूसरों के साथ मत करो” (महाभारत 5-1 5.1 7)

बौद्धधर्म कहता है—जिससे आपको दुख पहुँचे उससे दूसरों को पीड़ा मत पहुँचाओ (उद्धानवर्ग 5-1 8)

इस्लाम के अनुसार—“कोई भी इंसान तब तक सच्चा उपासक नहीं हो सकता जब तक कि वो अपने भाई के लिए वैसी कामना नहीं करता जो वो खुद के लिए चाहता है” (अन-नवानी 1 3 का 40 हदीथ)

जैनधर्म कहता है—दूसरों के साथ वैसा ही आचरण करो जैसा आचरण तुम अपने प्रति चाहते हो (आगमस सूत्रकृतंग 1-1 0-1 3)

ईसाई धर्म कहता है—तुम जो कुछ भी अपने प्रति करना चाहते हो उसे तुम दूसरों के लिए भी करो (मॅथ्यू 7-1 2)

सिख धर्म कहता है—जो चीज तुम अपने बारे में चाहते हो उसे दूसरों के लिए भी चाहो (ग्रंथ, जयजी 2 1)

पारसी धर्म कहता है—“कुदरत तभी अच्छी होती है जब तुम लोगों के साथ वो आचरण नहीं करते जिसे तुम अपने प्रति नहीं चाहते हो” (SBE 18-271) अवेस्ता—दादिस्तान—इ—दिनिक 94—5.

इसे “सुनहरा नियम” कहते हैं और सभी मानवतावादियों को अपने दैनिक जीवन में इसे लागू करने का प्रयास करना चाहिए।

विचार, एहसास और कार्य में सहमति

हमारे कार्य हमारी भावनाओं या विचारों से मेल नहीं खाते, तब हम यातना पाते हैं। हमारे कार्य हमारी भावनाओं और विचारों के अनुसार होते हैं तब हम खुश होते हैं। अपने कार्यों का हमारी भावनाओं एवं विचारों के साथ मेल करने का प्रयास बहुत आवश्यक है। हमें अपनी भावनाओं तथा विचार के साथ अपने कार्यों का विरोध करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हमें अपनी भावनाओं तथा विचारों के प्रति आस्थावान रहने का प्रयास करना चाहिए। इस तरह से हम खुश रह सकेंगे और दूसरों को भी प्रसन्न रख सकेंगे।

प्राकृतिक चीजें तथा मानव निर्मित चीजें

फल, वर्षा, सूरज, पशु, पेड़ आदि प्रकृति के ये उपादान मनुष्य द्वारा निर्मित नहीं हैं। परंपरा, रीति—रिवाज, कानून, सरकार, जातियाँ प्राकृतिक चीजें नहीं हैं, बल्कि मनुष्य द्वारा निर्मित चीजें हैं। मनुष्य यह माने कि मनुष्य निर्मित चीजों को नहीं बदला जा सकता है, कम चीजें नहीं बदलेंगी। मनुष्य यह मानता है कि मनुष्य द्वारा निर्मित चीजों को बदला जा सकता है, तो चीजें जरूर बदलेंगी।

सबके लिए मुफ्त शिक्षा स्वास्थ्य—सुविधा, और जीवन गुणवत्ता

मानवतावादी आंदोलन का कहना है कि जन स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता सभी को बिना किसी भेदभाव के मुफ्त मिलना चाहिए। किसी भी सरकार की यह प्राथमिकता होनी चाहिए। अन्य सभी मुद्दों को इस प्राथमिकता के बाद पुनर्गठित करना चाहिए। इसके लिए मानव तथा भौतिक संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन स्वार्थ, सत्ता, भ्रष्टाचार, हिंसा जैसी अन्य चीजों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण इन संसाधनों का दुरुपयोग किया जाता है।

अतीत और भविष्य

हमारे विगत इतिहास में अच्छी और बुरी चीजें रही हैं। हमें अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए और बुरी बातों को त्याग देना चाहिए। हमारा भविष्य अतीत की पुनरावृत्ति न हो। हमारे भविष्य के सभी हल हमारे अतीत में नहीं हैं। नए हालात में नए समाधान की जरूरत पड़ती है। मानवता हमेशा प्रगति करती रहती है, इसलिए कुछ अच्छी बेहतर चीजें का आना अभी शेष है।

अहिंसा का अर्थ है हिंसा न करना

अन्याय, शोषण, भेदभाव और हिंसा अपने आप खत्म नहीं होंगी। ऐसा करने वाले लोग अपनी इच्छा से इसको बंद नहीं करेंगे। हमें अन्याय, शोषण, भेदभाव और हिंसा के विरुद्ध खड़े होने के लिए लोगों को एकजुट होने में मदद करनी होगी। अन्याय, शोषण, भेदभाव और हिंसा के खिलाफ एक अहिंसक तरीके से संघर्ष करना होगा।

सरकार की नीतियाँ

जनता को वैद्यकीय सेवा, शिक्षा, आवास, पूर्णरोजगार, अन्न, पीने का पानी आदि की आवश्यकता सर्वोपरि है। वर्तमान परिस्थिति में वैश्वीकरण, विदेशी निवेश निजीकरण, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आमंत्रण आदि—आदि। इन सबसे महत्वपूर्ण है हमारी मूल—भूत आवश्यकताएं जिस पर व्यक्ति व राष्ट्र का विकास निर्भर करता है। इससे बढ़कर कुछ नहीं हैं—न ही वैश्वीकरण, न ही विदेशी निवेश, न निजीकरण, न बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और न ही कोई दूसरी चीज।

शारीरिक हिंसा क्या है?

किसी के द्वारा दूसरों को शारीरिक नुकसान पहुँचाना ही शारीरिक हिंसा है। जिसमें शरीर को कष्ट पहुँचे, शरीर का कोई आवश्यक अंग नष्ट हो या अंततः मौत हो जाए।

यहाँ पर कुछ उदाहरण पेश हैं। जैसे—युद्ध का आतंक, हत्या, मारपीट, बीबी—बच्चों की पिटाई, भुखमरी, व्यक्तिगत बीमारी, सामाजिक बीमारी, आत्महत्या, दंगा, संसाधनों का प्रदूषण, खतरनाक दवाओं का जानबूझकर व्यापारीकरण।

मानवतावादी आंदोलन किसी भी प्रकार की हिंसा का विरोध करता है।

आर्थिक हिंसा क्या है?

कोई भी ऐसा काम जो दूसरों के वैध आर्थिक अधिकारों को हानि पहुँचाए उसे आर्थिक हिंसा कहते हैं। दूसरे शब्दों में दूसरों के अस्तित्व और न्यूनतम जीवन परिस्थिति को नुकसान पहुँचाना अथवा उनकी वैध सम्पत्ति को छीना जाना आर्थिक हिंसा को परिभाषित करती है।—एकाधिकावाद, शोषण, बंधुआ मजदूर, धोखाघड़ी, घूसखोरी, उपभोक्ता वस्तुओं में मिलावाट, अधिक महँगी वस्तुएँ, कम भुगतान, सट्टेबाजी, चोरी, काला बाजारी, फिरौती, मुनाफाखोरी, जमाखोरी आर्थिक हिंसा को बढ़ावा देती है।

जातीय हिंसा क्या है?

उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों का शोषण, पुरुष द्वारा स्त्रियों का शोषण सबल का निर्बल को सताना, धनवानों का निर्धनों पर अत्याचार, अशिक्षितों पर अत्याचार, परम्पराओं का हनन, गरीबी, रीति—रिवाज के आधार पर हिंसा, रंग—भेद के कारण हिंसा, भेद—भावपूर्वक व्यवहार करना, छुआ—छूत भी एक हिंसा है, इस प्रकार से जातीय हिंसा पनपती है। अर्थात् मानवतावादी आन्दोलन में जातीय हिंसा का स्थान नहीं होता।

धार्मिक हिंसा क्या है?

किसी व्यक्ति को इसलिए नुकसान पहुँचाना क्योंकि वह किसी पंथ या आचरण को माननेवाला है अथवा नहीं है, धार्मिक हिंसा कहलाती है। धार्मिक विश्वास या आचरण में मतभेद पर आधारित आक्रामकता अथवा कोई व्यक्ति दूसरे धर्म के आदेशों को स्वीकार न करने पर उसे नुकसान पहुँचाना, अथवा कोई व्यक्ति महज हमारे धर्म का नहीं है इसलिए उसे निशाना बनाना ये सभी बातें धार्मिक हिंसा के परिपेक्ष्य में आती हैं।

धार्मिक हिंसा के उदाहरण हैं—धार्मिक असहिष्णुता, दकियानूसीपन, धर्माधता, अत्याचार, निंदा, छुआछूत, जातिवाद, धर्माधिककरण, बहिष्कार, भेदभाव, धर्मयुद्ध, अधिकृत या राज्य धर्म (अपरिहार्य विशेषधिकार और एकाधिकरण)—मानवतावादी आंदोलन में हिंसा का स्थान नहीं है।

लैंगिक हिंसा क्या है?

लिंग भेद के कारण किसी के प्रतिक्रिया जानेवाला नुकसान लैंगिक हिंसा कहलाती है। जब कोई व्यक्ति दूसरे को महज विपरीत लिंग का होने के कारण उसे हानि पहुँचाए, लैंगिक हिंसा के कुछ उदाहरण हैं—कानून द्वारा अनुमोदित लैंगिक असमानता, बलात्कार, बाल उत्पीड़न, महिलाओं की शिकायत को पुलिस द्वारा दर्ज न किया जाना, छेड़छाड़, लैंगिक पूर्वाग्रह, लैंगिक दमन, अपहरण, जबरन वेश्यावृत्ति कराना, एक लिंग की दूसरे पर ऊँच या नीच वाली भावना, सामाजिक भूमिकाओं का लादा जाना, शिक्षा से वंचित करना इत्यादि मानवतावादी आन्दोलन लिंग आधारित हिंसा का समर्थन नहीं करता बल्कि उसके विरुद्ध आवाज उठाता है।

मनोवैज्ञानिक हिंसा क्या है?

किसी को मनोवैज्ञानिक, मानसिक, नैतिक या भावनात्मक रूप से हानि पहुँचाई जाए तो उसे मनोवैज्ञानिक हिंसा कहते हैं। जो दूसरों की आंतरिक एकता, संतुलन और मन की शांति को हानि पहुँचाए उसे भी मनोवैज्ञानिक हिंसा कहा गया है।

मनोवैज्ञानिक हिंसा के विषय में अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं—भय स्थापित करना, नफरत का सिद्धांत फैलाना, विचारधाराओं को जबरन लादना, झूठ या नकारात्मक प्रचार—प्रसारमाध्यमों के जरिए जीवन के गलत मूल्यों को बढ़ावा देना, पूर्वाग्रस्त शिक्षा, ज्ञान और संस्कृति के समूचे क्षेत्र में संसरशिप, गलतसूचना, शून्यवाद आदि।

इस प्रकार की हिंसाओं का उक्त आन्दोलन सख्त विरोध करता है।

नैतिक हिंसा क्या है?

किसी भी तरह की हिंसा में सहभागी होना नैतिक हिंसा कहलाती है। यह हिंसा कई स्तर की होती है, कोई व्यक्ति इसको बढ़ावा देने में सीधे न जुड़ा हो, या सहभागी न हो या हिंसा को रोकने के लिए कुछ न करता हो तो भी वो इस तरह की हिंसा और उसके नतीजों के लिए जिम्मेदार होता है।

केवल अपने ही काम से काम रखना, उदासीनता, खुद को सीमित रखना, आत्मकेंद्रीयता, निर्दयता, संवाद का अभाव, स्वार्थ, खुद को धार्मिक कहलवाना नैतिक हिंसा का भाग है।

दूसरी तरफ एकजुटता, सामाजिक कार्य, सामाजिक और राजनैतिक मामलों में सहभागिता, संवाद, सक्रिय अहिंसा की भावना में पहले से झुकाव जैसी चीजों के जरिए हिंसक प्रवृत्ति को बदला जा सकता है।

मानवतावादी आंदोलन समाज के भीतर व्याप्त नैतिक हिंसा के खिलाफ लड़ने का एक संगठित साधन है। इसलिए नए सदस्य का पहला कार्य यह है कि वह ऐसी हिंसा के मामलों में मूक दर्शक रहना बंद कर दे और सक्रिय अहिंसा के जरिए हिंसक परिस्थितियों में परिवर्तन लाना शुरू कर दे।

मानवतावादी आंदोलन ऐसी किसी भी हिंसा का विरोध करता है।

आन्तरिक हिंसा क्या है?

किसी व्यक्ति विशेष द्वारा आन्तरिक रूप से अनुभव की गई हिंसा को आन्तरिक (या व्यक्तिगत) हिंसा कहते हैं। यह एक मिश्रित दुखदायी अनुभव है जिसमें व्यक्ति के भीतर नकारात्मक विचार, मनोविकार, शारीरिक तनाव और बाधाओं का समावेश होता है जिसे हम "आन्तरिक हिंसा" का स्वरूप मानते हैं।

यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति को विविध स्तरों पर असंतुलन और गैरसामंजस्य की यातनाएँ सहनी पड़ती हैं (जैसे. मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक)।

सबसे गम्भीर आन्तरिक हिंसा है अंतर्विरोध। कोई व्यक्ति एक बंद घेरे में, या अंतिम दौर पर परस्पर विरोधी विकल्पों के कारण विघटित हो जाता है वह उससे बाहर निकल नहीं पाता है तो उसे अंतर्विरोध का अनुभव होता है।

आन्तरिक हिंसा के तीन प्रमुख स्रोत हैं :-

- विगत निराशा, विद्वेष और नकारात्मक यादें जिसके साथ व्यक्ति तालमेल न बैठा सके।
- वर्तमान आत्मविस्मृति, अस्पष्ट प्राथमिकताएँ और मूल्य, समर्थन का अभाव, व्यवहारिक कठिनाईयाँ, स्व छवि या रवैया।
- भविष्य के प्रति अनिश्चितता और भय।

आन्तरिक हिंसा की अभिव्यक्ति के विविध रूप हैं—

नफरत, अविश्वास, पूर्वाग्रह, नाराजगी, निराशा, नकारात्मक यादें, आत्मविस्मृति, असुरक्षा, दुविधा, है संवाद का अभाव, (गरीबी, चीजों के खोना का, बीमारी का, बुढ़ापे का, मौत का) भय, कटुता, निराशावाद, नकारात्मकता, अपने पर, दूसरों पर तथा भविष्य के प्रति आस्था का अभाव, निरुद्देश्य जीवन, जीवन का गलत उद्देश्य, सम्मोह, अनिवार्यता, विचारों, एहसासों और कार्यों में असहमति, तनाव, विरोधाभास। उपर्युक्त बातों को आमतौर पर यातना कहा जाता है।

आन्तरिक हिंसा की अभिव्यक्ति मुख्य रूप से दो प्रकार से होती है—

- शारीरिक उत्पात और बीमारी
- बाह्य हिंसा अर्थात् दूसरों पर आक्रमण

जीवन का अर्थ

हमारे जीवन का अर्थ एक महत्वपूर्ण विषय है। हम यह महसूस करते हैं कि हमारे जीवन का एक अर्थ है, तब हम अच्छा अनुभव करते हैं। जब हमें लगता है कि हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है तब हम बुरा महसूस करते हैं। जब हमारे जीवन के अर्थ सकारात्मक होते तो हम खुद के प्रति व दूसरों के प्रति अच्छा काम करते हैं। हमारे जीवन का अर्थ नकारात्मक होता है, तो हम यातना पाते हैं और खुद को तथा दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। जीवन के अर्थ सतही और कामचलाऊ होते हैं तो हमारी खुशी भी सतही और कामचलाऊ होने के अलावा भययुक्त तथा असुरक्षित होती है। जीवन के अर्थ गहन तथा स्थायी होते हैं तब हमारी खुशी भी मजबूत तथा स्थायी एवं भयमुक्त तथा सुरक्षित होती है। हमारे जीवन के अर्थ को लादा नहीं जा सकता है, यह एक ऐसी चीज है जिसे हमें मुक्त रूप से तलाश करना चाहिए तथा इससे प्यार करना चाहिए।

चर्चा : हमारे जीवन का अर्थ तथा उद्देश्य क्या है? क्या हमारे जीवन में उद्देश्य होने चाहिए अथवा नहीं? क्या हम इस बात से अगवत हैं या नहीं? क्या यह अच्छा होता है या नहीं? क्या हमने इसे मुक्त रूप से चुना है? क्या हम इसे स्वीकार करते हैं अथवा नहीं? क्या हम इससे प्यार करते हैं या नहीं?

मानवीकरण के व्यक्तिगत कार्य के स्तम्भ

गहन कार्यशाला के दौरान प्रस्तुतिकरण के लिए सामग्री

अ) यथार्थ कार्य के सिद्धांत—प्रस्तावना जीवन रणनीति के रूप में सिद्धांत, न कि नैतिक रूप में उद्देश्य

(हमारे अंदर तथा आसपास आंतरिक तथा बाह्य सामंजस्य। खुशी तथा आजादी और केंद्रीय मूल्य के रूप में मनुष्य का होना)।

तीन प्रकार के कार्य (उदासीनता, विरोधाभास और संयोजकता), समस्याएँ और विरोधाभास, सामान्यतः यथार्थ कार्य (तीन विशेषताएँ)। सिद्धांत (पढ़ना और संभव हो तो उदाहरण सहित एक सिद्धांत को समझना और चर्चा) करना। जीवन के अनुस्थापन के लिए सामंजस्य का होना एक आदर्श बात है। आत्मग्लानि का परित्याग। आचरण के आंतरिक अनुभव की तरफ ध्यान देना।

ब) आंतरिक मार्गदर्शक—प्रस्तावना (जीवन में प्रतिरूप, उदाहरण)

उद्देश्य (मार्गदर्शन, प्रेरणा, साथ, मदद)। आंतरिक मार्गदर्शक के प्रतिबिंबों के प्रकार (काल्पनिक या वास्तविक, धार्मिक या अधार्मिक, मृत या जीवित, पुरुष या स्त्री या दोनों नहीं, स्वनिर्मित या पहले से निर्मित)। आंतरिक मार्गदर्शक की तीन प्रमुख विशेषताएँ (बुद्धिमानी, दयालुता, और शक्ति, संतुलन और तनाव, उनके परिणाम)। आंतरिक मार्गदर्शक की वास्तविकता (मनोवैज्ञानिक, रहस्यात्मक या असाधारण पहलू)। आन्तरिक मार्गदर्शक का स्थापन (अंदर या बहार, सामने, पीछे, ऊपर, नीचे, एक तरफ)। आंतरिक मार्गदर्शक के साथ संवाद (पुकार, सूक्ति, संकेत, श्वसोच्छ्वास)। प्रतिक्रियाओं के प्रकार—श्रवण (गांधीजी की आंतरिक वाणी)। दृश्य (अर्जुन के कृष्ण)। प्रक्रिया (आकृति, दृढ़ विश्वास, प्रतिक्रिया, व्यापक मुद्दे)। Cenesthetic (मुसलमानों का अल्लाह)। स्वीकृत प्रार्थना (मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक, असाधारण)।

स. शक्ति का मार्ग

प्रस्तावना, उद्देश्य (आंतरिक एकता को बढ़ाना, अस्तित्व के दूसरे तरीके की झलक, आंतरिक आकार को फिर से प्राप्त करना। यह एक धीमा और सुरक्षित रूपांतरण है, लेकिन इस नए आगंतुकों को समझना पाना मुश्किल है। यह केंद्रोंपर भी काम करता है) अनुभव की प्रमुख विशेषताएँ (असाधारण शांति और आंतरिक एकता, एक वैकल्पिक स्पष्टीकरण के रूप में चेतना के स्तर), अभ्यास (शांति का पहला अनुभव जिस पर विशेष योग्यता प्राप्त करनी चाहिए, भावनात्मक प्रवृत्ति, गोला, मार्ग, अभिस्थापन, अनुभूति, विस्तार, ध्यान, सहभागिता)

पूरक अभ्यास

संक्षिप्त शिथिलन—प्रत्येक मार्गदर्शित अनुभव की शुरुआत एक मार्गदर्शित बाह्य शिथिलन से होती है (दो या तीन मिनट) जो सहभागियों के सिर तथा धड़ के केंद्रीय मांसल तनाव को शिथिल करती है, जिसमें पराकाष्ठाएं अलग हो जाती हैं। इस तरह से पाठक शांति, मंद भारीपन, नरमी और गरमी की अनुभूति को महसूस करता है जो माथा, सिर, नाक, मुंह, जबड़ा, गरदन, कंधा, पीठ, कमर, नितंब से होकर नीचे उतरती है। इसके बाद कंधों, छाती पेट और निचले पेट में संवेदना का एहसास होता है। इस शिथिलीकरण के तुरंत बाद पाठक मार्गदर्शित अनुभव को जोर से धीमी रफ्तार में रुक-रुक कर पढ़ता है।

पूर्ण शिथिलीकरण—प्रस्तावना, उद्देश्य (ध्यान सहित शिथिलीकरण, दूसरे अभ्यासों के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करना, तनाव को पहचानना और दैनिक जीवन में उन्हें शिथिल करना), आंतरिक/बाह्य, शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक शरीर की अवस्था (इसे कैसे बनाएं—आसन, काल्पनिक रेखा, नीचे से उपर), लय (कोई भी गति या वेग हो लेकिन सतत रहे)। शरीर के मार्ग—जो काल्पनिक न हो बल्कि उनका अनुकरण किया जाए। कठोर हिस्सों के साथ तैयारी करना (अधिकतम तनाव, अचानक ढीला कर देना), द्वितीय स्पष्टीकरण—आसन क्यों, ऊपर—नीचे क्यों, केंद्र और बाह्य सीमा क्यों?)

शांति का अनुभव—उद्देश्य—गहन शिथिलीकरण, शक्ति के मार्ग की तैयारी, शब्दों में होने का एक नया तरीका, हमारे श्रेष्ठतम आकार—शिथिल तथा ध्यानपूर्वक। शांति के अनुभव का अभ्यास कब करें?

मार्गदर्शित अनुभव—प्रस्तावना, उद्देश्य (ध्यान के रूप में मार्गदर्शित अनुभव, आचरण के प्रतिरूप में, एक शोध के

रूप में, आत्मज्ञान के रूप में), समुचित आदान-प्रदान, स्पष्टीकरण के साथ कम-से-कम एक का उचित अभ्यास करना।

निर्देशित ध्यान—प्रस्तावना (संक्षिप्त)। उद्देश्य, आकर्षित, सरल और निर्देशित ध्यान। उदाहरण और अभ्यास। तनाव पर ध्यान देना और शिथिल ध्यान। इसके लाभ।

उन्नत अभ्यास

आत्मज्ञान—प्रस्तावना, उद्देश्य।

मनोवैज्ञानिक शारीरिक व्यायाम—प्रस्तावना, उद्देश्य।

विरेचक—प्रस्तावना, उद्देश्य।

स्थानांतरण—प्रस्तावना, उद्देश्य।

आत्म—स्थानांतरण—प्रस्तावना, उद्देश्य।

आन्तरिक मार्गदर्शक (वैकल्पिक प्रस्तावना)

जब कई बार हम अकेले हों और अपनी शंकाओं और परियोजनाओं के बारे में विचार कर रहे हों तब हो सकता है हम जोर से बोलना शुरू कर दें मानो हम किसी से बात कर रहे हों। कभी-कभी हम खुद से ही सवाल करते हैं और खुद को ही जवाब देते हैं। कोई चीज यदि हम गलत ढंग से करें तो उसके लिए खेद भी व्यक्त करते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने माता-पिता या प्रियजन या मान्यवर व्यक्तियों की कल्पना करते हैं और उनसे प्रश्न पूछते हैं, जबकि वास्तव में ये जीवित नहीं होते।

हमारी जगह पर यदि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो उस हालत में क्या करता ऐसा भी हम विचार करते हैं।

कई बार हम जिसे अच्छा उदाहरण कहते हैं, उसका अनुकरण भी करते हैं। हम दूसरों के रवैये और आचरण का अनुकरण करते हैं और कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों से काल्पनिक वार्तालाप भी करते हैं।

उपरोक्त सभी बातें हमारी कल्पना शक्ति की उपयोगिता को निर्देश करते हैं—आन्तरिक मार्गदर्शक किस तरह बनता है इसकी क्रियाविधि बनाते हैं।

व्यक्ति अपनी पसंद का मार्गदर्शक चुन सकता है। जीवन में जो एक संदर्भ की भूमिका निभाते हैं ऐसे मार्गदर्शक या मार्गदर्शकों को पहचानने का कार्य बहुत दिलचस्प है। इस कार्य को परिपूर्ण रूप से करने के लिए हमें उन प्रतिमाओं का चुनाव करना होगा, जिससे आत्मशक्ति तीन जरूरतों को पूरा कर सकें।

1. प्रज्ञा, 2. दयालुता और 3. बल। यदि इनमें से एक गुण कम पड़ जाए तो इन प्रतिमाओं से हमारे संबंध निरुपयोगी हो जाएँगे। इन तीनों गुणों से युक्त व्यक्ति हमें न मिलें तो हम ऐसे व्यक्ति की कल्पना भी कर सकते हैं जो मृत हो या जिसका कभी अस्तित्व ही न रहा हो। इसलिए जीवन में हम शंका या उलझनों का सामना करते हों तब आन्तरिक मार्गदर्शक के साथ अपने आप को जोड़ दें तो मार्गदर्शक के रूप में या फिर एक साथी के रूप में वह बहुत उपयोगी भूमिका निभाते हैं।

आन्तरिक मार्गदर्शक पर मार्गदर्शित अनुभव

सूचना—पाठ में तारांकित (★) का मतलब है पढ़ते समय दीर्घ मौन रखना। मौन की अवधि मार्गदर्शित अनुभव के संदर्भ में होगी।

आन्तरिक मार्गदर्शक की रचना

मैं एक उज्ज्वल साफ—सुथरी जगह पर हूँ। मैं यहाँ पहले भी आया था, उस समय मुझे बेहद खुशी का अनुभव हुआ। (★)

मैं देखता हूँ कि सूरज उपर चढ़ता जा रहा है। मैं बिना किसी तकलीफ के उसे देख सकता हूँ। एब तक विलक्षण बात होती है। सूर्य की दो किरणें मेरी ओर नीचे आ जाती हैं। एक मेरे सिर तक पहुँचती है और दूसरी मेरे दिल तक।

मैं बहुत हल्का महसूस करने लगता हूँ और ऐसा महसूस होता है कि मैं सूर्य की ओर ऊपर खिंचते जा रहा हूँ। सूर्य की उन किरणों का सहारा लेते हुए, मैं सूर्य की ओर ऊपर उठता जाता हूँ।

इस प्रज्वलित बड़े गोलाकार से मैं एक मृदु और लाभदायी गरिमा पाता हूँ। देखते ही देखते यह गोला एक महाकाय गोलाकार में बदल जाता है।

अब मैं सूर्य के भीतर प्रवेश करता हूँ, वहाँ पहुँचकर, मैं गहरे श्वास अंदर, बाहर लेता हूँ। मेरी हर साँस पूरी और गहरी है। सूर्य की रोशनी मुझे घेरकर मेरे शरीर में प्रवेश करती है। मेरे साँस की हर ताल के संग वह मुझमें ज्यादा से ज्यादा शक्ति भर देती है।

मैं अपने आप को शांत और तेजस्वी पाता हूँ। फिर, अपनी अत्यंत शुद्ध और उत्तम संवेदनाओं के साथ अपने आंतरिक मार्गदर्शक को मेरे सामने प्रकट होने के लिए कहूँ। मैं अपने मार्गदर्शक को जैसा वह उचित और उत्तम समझे उसी रूप में प्रकट होने के लिए कहता हूँ। (★)

मेरा मार्गदर्शक मुझे कहता है : "मैं प्रतिनिधि हूँ तुम्हारे आंतरिक बल का, तुम्हारी ऊर्जा का, और यदि तुम मेरा उचित तरह से प्रयोग करना जान जाते हो तो तुम्हें जिंदगी में एक नयी दिशा मिलेगी, प्रेरणा मिलेगी, और सुरक्षा मिलेगी। पर पहले तुम्हें कोशिश करनी होगी कि तुम मुझे बिलकुल स्पष्ट रूप में देखो, या फिर मेरे अस्तित्व को अपने दिल के भीतर अनुभव करो।" (★)

मैं अपने मार्गदर्शक को कहता हूँ कि वह अपने हाथ से मेरे माथे को स्पर्श करे और उन हाथों को कुछ देर के लिए वहीं लगाए रखे। अब मैं महसूस करता हूँ कि मेरी छाती के भीतर एक प्रकाशमान पारदर्शी गोलाकार विकसित होता जा रहा है। बढ़ता हुआ वह गोलाकार हम दोनों को समेट लेता है। (★)

मैं अपने मार्गदर्शक से प्रकृति की हर रचना के प्रति एक गहरा प्रेम दुबारा मुझमें जीवित है, ऐसी प्रार्थना करता हूँ और यह भी प्रार्थना करता हूँ की सारी जिन्दगी उसकी प्रसन्नता और शांति भर साथ मेरे भीतर रहे। (★)

अब मैं उससे जीवन का अर्थ क्या है? पूछता हूँ और अपने मार्गदर्शक के उत्तर की प्रतीक्षा करता हूँ। (★)

फिर मैं पूछता हूँ कि मृत्यु क्या है? और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता हूँ। (★)

ध्यानवस्था में मैं अपने जीवन की कुछ खास परिस्थितियों के बारे में पूछता हूँ और अपने मार्गदर्शक के उत्तर की प्रतीक्षा करता हूँ। (★)

मैं मार्गदर्शक से कहता हूँ कि वो न सिर्फ संदेह तथा व्यथा के समय में ही मेरे साथ रहे बल्कि आनंद के पल में भी मेरे साथ रहे।

मार्गदर्शक मुझसे दूर चला जाता है और एक बड़ा फूल बन जाता है जिसकी पंखुड़िया खुली हुई हैं और चमकते सूरज की पृष्ठभूमि में उसके रंग विपरीत हैं। इसके बाद फूल अपना आकार और रंग बदलने लगता है मानो वह एक लयात्मक केलिडोस्कोप हो। इस पर मैं महसूस करता हूँ कि मार्गदर्शक मेरी प्रार्थना का उत्तर देगा।

जीवन और शक्ति से भरपूर होकर मैं चमकते सूरज से दूर हटने लगता हूँ।

सूर्य की दो किरणों के पीछे-पीछे मैं एक सुंदर परिदृश्य में उतरता हूँ। जैसे ही मैं नीचे उतरता हूँ वैसे ही मुझे अपने भीतर एक महान दयालुता का अनुभव होता है जो इस दुनिया में मेरे लोगों के भीतर खुद को व्यक्त करना चाहता है (★)

विस्थापन और आंतरिक मार्गदर्शक

मैंने दिन भर की अपनी गतिविधियाँ पूरी कर ली हैं। मैं हमेशा की तरह अपने घर जाता हूँ।

मैं ऐसी स्थिति में जी रहा हूँ जो बरकरार नहीं रह सकती। मुझे एक निर्णय लेना ही होगा, लेकिन मैं नहीं जानता कि कौन सा निर्णय सबसे अच्छा है। (★)

मैं आईने की तरफ बढ़ता हूँ और अपने थके चेहरे को देखता हूँ।

मैं अपने आंतरिक मार्गदर्शक के बारे में सोचता हूँ, मानो मेरा मार्गदर्शक एक आदमी था। मैं अपनी कल्पना पर ध्यान केंद्रित करता हूँ, "इस परिस्थिति में आप मुझे क्या सलाह देते हैं? समस्या को हल करने के लिए मैं स्पष्टीकरण का प्रयास करता हूँ।" (★)

मैं देखता हूँ कि मेरा प्रतिबिंब अदृश्य होने लगा है और आईना फिर से वापस आ जाता है। कुछ देर बाद मैं अपने सामने से प्रकाश को हटते देखता हूँ और मेरी समस्याओं से संबंधित लोग तथा परिस्थिति सामने आने लगती है। (★)

अचानक मैं एक आवाज सुनता हूँ जो मेरी कठिनाईयों को समझाती है। आईने में मैं अपने मार्गदर्शक को एक दिशा की तरफ संकेत करते देखता हूँ जिसका मुझे अनुकरण करना ही होगा। (★)

आईना फिर से साफ हो जाता है और मेरे चेहरे का प्रतिबिंब झलकने लगता है। मैं खुद को राहत से भरा महसूस करता हूँ, और अपने भीतर समस्या के समाधान को महसूस करने लगता हूँ। (★)

परेशानी और आंतरिक मार्गदर्शक

मैंने अपना घर छोड़ दिया है मैं उस व्यक्ति से मिलता हूँ जो मुझे भावनात्मक रूप से बहुत पेशान करता है। मैं उस व्यक्ति से नमस्कार करता हूँ, ताकि मैं उसके साथ चलना जारी रख सकूँ, लेकिन वह व्यक्ति मेरे पास आता है मेरी बाँह पकड़ कर मुझे एक बार में आने के लिए आमंत्रित करता है। हम दोनों एकान्त में जाते हैं।

हम वहाँ बैठ जाते हैं, और बिना किसी खास वजह से वह व्यक्ति कुछ चीजों के बारे में कठोर टीका करता है जो कि मेरे लिए बहुत निजी हैं। (★)

एक पल में वह व्यक्ति आक्रामक हो जाता है और कई बार मेरी तरफ इशारा करते हुए तेज स्वर में बोलने लगता है। मैं अपने आसपास के लोगों को देखता हूँ, और मैं जानता हूँ कि वे लोग मेरी तरफ उत्सुकता से देख रहे हैं व मेरे आरोपकर्ता के आक्रामक शब्दों को सुन रहे हैं। (★)

मैं उठकर जाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन वह व्यक्ति मेरे कंधों को पकड़कर मेरे प्रति कपटपूर्ण असहनीय बातों को कहना जारी रखता है। वह व्यक्ति मुझे खुले आम अपमानित करता है और अभद्र तरीके से मेरा मजाक उड़ाते हुए मुझे बरबाद कर देने की धमकी देता है। मैं महसूस करता हूँ कि मैं कई चीजें कर सकता हूँ, लेकिन मैं चाहे जो करूँ यह व्यक्ति उसका उपयोग मुझे हानि पहुँचाने के लिए करेगा। (★)

चीजें इस कदर लज्जात्मक तरीके से जारी रहती हैं कि मेरे अंदर इसका तुरंत जवाब देने कि इच्छा तेज होने लगती है कि परिणाम चाहे जो हो। तभी मैं अपने मार्गदर्शक को याद करता हूँ और अपने मन में कहता हूँ, "मुझे खुद को काबू में रखना चाहिए।" उसी पल में अपने भीतर की आवाज को मुझसे कहते सुनता हूँ "उस व्यक्ति से सलाह के लिए पूछो।" इस प्रार्थना से अभीभूत होकर वह व्यक्ति एकदम घमंडी हो जाता है और मेरी जिम्मेदारियों के बारे में उपदेश करने लगता है। हमारी बातचीत जारी रहती है। कुछ देर बात, जब वो बहुत ज्यादा पीने लगता है तो वह व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत बातें बताने लगता है। मैं उस व्यक्ति की दयनीय कहानी चुपचाप सुनता हूँ। मेरे आस-पास के लोग भी चुपचाप उसे सुनते हैं। (★)

मैं उठता हूँ और स्नेह से उसे नमस्कार करता हूँ और चला जाता हूँ। नशे में धुत वह आदमी अपनी जान पहचान के दूसरे लोगों को पेशान करने लगता है, लेकिन कुछ देर बाद, दयनीय रूप से वह टेबल पर लुढ़क जाता है।

अपने फेफड़ों में ताजी, ऊर्जावान हवा समाए हुए मैं बाहर सड़क पर टहलता हूँ।

दुविधा और आंतरिक मार्गदर्शक

मैं एक इमारत में प्रवेश करता हूँ और उस दुखदायी स्थिति के बारे में सोचता हूँ, जिसका मुझे सामना करना है। (★)

मैं सोचता हूँ कि आज हर चीज खराब ही होगी। मैं जानता हूँ कि मैं असफलता की इस भावना के साथ रहूँगा तो यह मुझे असुरक्षित महसूस कराएगी। मेरी ताकत का ह्वास हो रहा है जिससे मैं सचमुच मात खा जाऊँगा। यह महसूस करने पर मैं रुक जाता हूँ। मैं इसे छोड़ने के लिए तैयार महसूस करता हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि भाग जाऊँ, उसी जगह जहाँ से मैं आया था। लेकिन उसी वक्त मैं जानता हूँ कि मुझे विपरीत दिशा में प्रयास करना चाहिए। मैं अपने आपको इस दुविधा में पाता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए और मैं क्या कर न कर पाने जैसा महसूस करता हूँ। (★)

मैं एक पल के लिए सोचता हूँ और अपने आप से कहता हूँ, "मुझे अपने मार्गदर्शक से शक्ति चाहिए।" तुरंत मैं महसूस करता हूँ कि मेरी साँसे गहरी होने लगी हैं मेरा शरीर सीधा तन गया है। मैंने अपना आत्मविश्वास फिर से एक बार वापस पा लिया है। मैं महसूस करता हूँ कि हर चीज सही हो जाएगी, क्योंकि आखिरी नतीजा इस बात पर निर्भर है कि मैं चीजों को कैसे करता हूँ, और अब मैं जानता हूँ कि मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमताओं का उपयोग करूँगा। (★)

मार्गदर्शित अनुभव—शांति का कुआँ

प्रयोजन—निम्न अनुभव हमें शांति के गहरे कार्यों का परिचय कराते हैं और हमारी जरूरत पड़ने पर, अपने ही भीतर शांति और खुशी की खोज करने के लिए मदद करते हैं। इसके अलावा, अपने अहंकार की सीमाओं के परे एक झलक देखने का सामर्थ्य प्रदान करता है।

अनुभव

मैं लोगों के बीच हूँ, कुछ मेरे परिवार के हैं, और कुछ मेरे अच्छे दोस्त हैं। हम सब एक अच्छे पहाड़ी उद्यान में हैं। यह उद्यान कुछ ही लोगों को मालूम है, इसलिए बहुत कम लोग यहाँ आते हैं। हम यहाँ मिलकर छुट्टी का दिन मौज मस्ती में बिताने आए हैं। (★)

हम निसर्ग के बीच हैं और बड़े पेड़ों के साए में आराम से एक मंडल बनाकर बैठे हैं। (.)

हमारे चारों ओर छोटी घास फैली हुई है और बहुत सारे अच्छे-अच्छे पेड़ हैं, जिन पर रंग-बिरंगे फूल और फल लगे हैं। (...) पास में ही बहते हुए झरनों की मंद मधुर आवाज मुझे सुनाई दे रही है। मुझे पक्षी गाते हुए सुनाई दे रहे हैं। मुझे खूबसूरत तितलियाँ इधर-उधर उड़ती हुई दिखाई दे रही हैं। मौसम भी बहुत सुहावना है। (...) मैं धीरे से खालिस हवा की गहरी सांस लेता हूँ। मुझे अपने पूरे शरीर के अंदर स्वास्थ्य प्रदान करनेवाली भावना का एहसास हो रहा है। मुझे हर बात से समरसता भी अनुभव हो रही है।

मेरा एक दोस्त सुझाव देता है कि हम सब अपनी आँखें बंद कर लें और इस परिस्थिति से संबंधित सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाने की कोशिश करें। हमें यह सुझाव भाता है और हम उसपर अमल करते हैं। मैं अपनी आँखें बंदकर लेता हूँ और अपनी मनः स्थिति का अनुभव करता हूँ। मैं अपनी मनोदशा और शरीर की संवेदना को महसूस करता हूँ। (★)

मेरे दोस्त के सुझावों पर मैं अमल करता हूँ। वह धीमी और विनम्र आवाज में कहते जा रहे हैं, "अपने नजदीकी दोस्त, मतलब अपने शरीर की संवेदनाओं को महसूस करो। अब हम अपने शरीर की सैर करते हैं, जिससे उसमें स्वास्थ्य की भावना उभर आएगी। सबसे पहले हम अपने माथे की संवेदना को महसूस करें, हमारे माथे के अंदर के मांस की संवेदना जान लें। (...) कोमलता, सौम्य जड़त्व और ताजगी की यह सुहावनी संवेदना आल्हादक बनाए। अपने माथे को आराम दीजिए। (...) इस आरामदायक भावना को आँखों तक नीचे आने दीजिए, जैसे ताजा पानी धीरे से आपके शरीर पर उपर से नीचे की तरफ आ रहा हो। (...) फिर यह संवेदना नाक तक आने दीजिए (...) अब अपने मुँह के स्नायु ढीला छोड़िए। फिर जबड़ा (...) अपनी गर्दन की तरफ जाइए और फिर उसे ढीला छोड़िए (...) इस आल्हादक संवेदना को साथ लेकर अपने कंधों तक उतर आइए। फिर वहाँ के स्नायु ढील छोड़ दीजिए (...) कंधों से आगे अपने शरीर की संवेदना को पीठ के ऊपरी हिस्से तक लाइए। वहाँ की पेशियों को इस संवेदना का अनुभव करने दीजिए। फिर उन पेशियों को ढीला छोड़िए। (...) अपनी पीठ के बीच हिस्से पर आकर फिर नितंब तक आइए। ऐसा करते वक्त हर बार आल्हादक संवेदना उन मांस-पेशियों तक पहुँचने का अनुभव लीजिए। जिससे उसके तनाव अपने आप पिघलते जाएँगे।"

अब हम कंधों तक लौट चलते हैं। दोनों कंधों में आराम की संवेदना का अनुभव कीजिए। फिर उसे कंधों से छाती तक बहने दीजिए (...) छाती की पेशियों के तनाव को गायब होते हुए अनुभव कीजिए। इससे आराम पाकर आप ज्यादा सांस ले सकेंगे (...) यह आल्हादक संवेदना पेट तक ले जाइए। (...) अपना पेट ऊपर से नीचे तक ढीला छोड़िए। हम अपना पूरा शरीर ढीला छोड़ दें। (★)

मुझे स्वास्थ्य की भावना अपने पूरे शरीर के अंदर से दौड़ती हुई मालूम हो रही है। फिर मेरा दोस्त सुझाता जाता है, "अब हिले बगैर, आप अपनी दोनों तरफ बैठे आदमियों के हाथ पकड़ लें।" जैसे ही हम वैसा करते हैं, हम एकता का एक विस्तृत मंडल बनाते हैं। (★)

"अब" मेरा दोस्ता कहता है, "अब अपने सीने में, अपने सीने के बीचोंबीच, अपने दिल की जगह एक सकारात्मक भावना की तरह इस आल्हादक संवेदना का अनुभव कीजिए। (...) उस आल्हादक संवेदना का अनुभव लीजिए। अपने मन को अपने सीने के अंदर गोता लगाकर वहीं रहना दीजिए, जहाँ वह सकारात्मक भावना रही है। (...)"

“अब धीमे से और आहिस्ता इस संवेदना को बढ़ाने की शुरुआत कीजिए। उसे बड़ा और बड़ा बनाइए। (...) वह सकारात्मक संवेदना आपके सीने के बीच से बढ़ती हुई अनुभव कीजिए। (...) उसे चारों तरफ बढ़ता हुई महसूस कीजिए जब कि आपकी श्वसनक्रिया और बनती जाएगी। (...) उसको बढ़ती हुई महसूस कीजिए। अपनी श्वसनक्रिया भी उसके साथ जाने दीजिए। (...) अपना दिल खोल दीजिए और उसे उस सकारात्मक भावना को बढ़ती हुई और विस्तृत होती हुई अनुभव करने दीजिए। (...) उस सकारात्मक संवेदना को पूरे शरीर में पहुँचते हुए अनुभव कीजिए। उसे गहरा विश्राम करने दें।

(...) मैं जैसा ही यह करता हूँ मैं यह विस्तृतीकरण पूरे शरीर में महसूस करता हूँ। मैं अपने दिल को खुल जाने देता हूँ। उसे निर्भय और खुश देखता हूँ।” (★) (★)

हम अपनी आँखे सहज खोलते हैं। मुझे महसूस होता है कि सभी ने एक ही अनुभव पाया है। हम वैसे ही उसी स्थिति में रहते हैं। खामोश और खुश, हमारे चेहरे पर परमानंद की भावना है। सब कुछ ज्यादा तेजस्वी दिखाई देता है। हम हाथ पकड़ते रहते हैं, जिससे एकता की व सहचर्य की विरल भावना का स्वाद ले सकते हैं। इस जादूभरे क्षण में मुझे लगता है कि ‘मैं’ की क्षुद्र भावना ‘हम’ की महान भावना के आगे झुक रही है। (★)

अनुभव का बांटना—

सहभागी उनके अनुभव पर टिप्पणी करें।

सुझाव—

जब तक इस पर प्रभुत्व नहीं आता यह अनुभव दोहराएँ और जब भी आप मानवीकरण के सामाजिक कार्य को ठोस बनाना चाहते हैं इसे दोहराएँ। जब कभी मौका मिले दूसरों के लाभ के लिए यह अनुभव प्रयोग में लाएँ।

यथार्थ कार्य के सिद्धांत

1. **अनुकूलन का सिद्धांत** : चीजों के क्रमविकास के खिलाफ जाने का अर्थ है खुद के खिलाफ जाना।
2. **क्रिया और प्रतिक्रिया का सिद्धांत** : जब आप किसी चीज पर एक दिशा में बल लगाते हैं तो आप उसकी विपरीत दिशा में बल पैदा करते हैं।
3. **समयोचित कार्य का सिद्धांत** : किसी विशाल बल का विरोध न करें। उसके कमजोर होने तक पीछे हटें तब दृढ़ता के साथ आगे बढ़ें।
4. **समानुपात का सिद्धांत** : जब तक चीजें साथ रहती हैं तब तक सही रहती हैं, अकेले में नहीं।
5. **संतुष्टि का सिद्धांत** : यदि दिन और रात, ग्रीष्म काल और शीतकाल आपके लिए समान हैं, तो आपने अंतर्विरोध को पार कर लिया है।
6. **आनंद का सिद्धांत** : यदि आप सुख का पीछा करेंगे तो आप खुद को यातना से बाँध लेंगे। लेकिन जब तक आप अपने स्वास्थ्य का नुकसान नहीं करते, बिना किसी रुकावट के, मौका मिलने पर आप सुख का आनंद लें।
7. **तात्कालिक कार्य का सिद्धांत** : यदि आप किसी अंत का पीछा करेंगे तो आप खुद बंध जाएँगे। लेकिन आप जो कुछ भी करें, उसे एक अंत की तरह पूरा करें तो आप खुद को मुक्त कर लेंगे।
8. **बोधगम्य कर्म के सिद्धांत** : आप अपने अंतर्द्वन्द्व को अदृश्य करते हैं जब आप उसे उसके मूलभूत आधार पर समझते हैं ना कि आप उसका समाधान करते हैं।
9. **स्वतंत्रता का सिद्धांत** : आप औरों को कष्ट देते हैं तब आप खुद को बाँधे रहते हैं। लेकिन जब आप किसी को कोई कष्ट नहीं देते तो आप जो चाहते हैं वह करने के लिए मुक्त रहते हैं।
10. **एकजुटता का सिद्धांत** : आप दूसरों से वही व्यवहार करते हैं जैसा आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं, तब आप खुद को मुक्त कर लेते हैं।

दूसरों के साथ संवाद प्रारंभ करने के लिए इस सिद्धांत का महत्त्व है। हम यह जानते हैं कि अपने आपको संकुचित कर लें या अपने चारों तरफ घेरा डाल लें तो उसके गंभीर परिणाम होते हैं। इसे स्वार्थ कहते हैं

जिसकी वजह से हम अपने आपको सीमित कर लेते हैं तब आपसी संवाद नहीं होता है। इस सिद्धांत का आशय यही है कि हमें औरों की तरफ विधायक दृष्टिकोण रखना चाहिए। यह सिद्धांत एक और दूसरे सिद्धांत "औरों को हानि मत पहुँचाए" को पूरक है। लेकिन इन दोनों सिद्धांतों में वैसे काफी फर्क है। एकजुटता के बारे में दी जाने वाली सीख यह मानवता के बारे में सबसे प्राचीन सीखों में से एक है। उदाहरणार्थ—

एक शिष्य ने कंफ्यूशियस से पूछा—“अच्छा आदमी कौन है?”

गुरु ने उत्तर दिया—“तुम अच्छे काम से अच्छे आदमी की पहचान कर सकते हो। एक शासक अपनी जनता के लिए अपना श्रेष्ठतम प्रयास करता है केवल उनके लिए जीता है तो तुम उसे अच्छा कह सकते हो। लेकिन इच्छा होने से ज्यादा वह एक संत है जो ज्ञान के मामले में पहले खुद को मजबूत करता है और बाद में वह ज्ञान दूसरों को देता है, वह खुद को मिलने वाले लाभ को दूसरों को दे देता है, वह जो कुछ अपने प्रति दूसरों से चाहता है वह दूसरों के लिए भी वैसा ही करता है। इस तरह से, शासक बने बगैर भी कोई व्यक्ति इसी मापदंड से संत बन सकता है। और यह बात उसके पद या अधिकार पर निर्भर नहीं होती।”

1 1 . परस्पर विरोध के निषेध का सिद्धांत : इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि घटनाओं ने आपको किस दल में रखा है। आपके लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि आपने किसी दल का चुनाव नहीं किया।

1 2 . कर्म के संचय का सिद्धांत : अंतर्विरोधी और एकात्मक कार्य आपके भीतर जमा होते रहते हैं। यदि आप आंतरिक एकता के कार्य दोहराते रहेंगे तो आपको कोई भी चीज नहीं रोक सकती।

मानव को केंद्रीय मूल्य तथा महत्त्व में रखना⁴

सदियों से मानव प्राकृतिक एवं सामाजिक जगत तथा खुद के बारे में पूछता आया है। मनुष्य अपनी दुनिया अपनी जिंदगी, समाज, इतिहास और अस्तित्व का अर्थ खोजने का प्रयास करता रहा है।

ऐसे लोग जो पूछते थे, उनकी परिस्थितियों जिनमें वो करता थे और उन्हें मिलने वाले जवाब ये सारी चीजें अलग जैसी होती थी। इन जवाबों को लोग कम या ज्यादा हद तक अपनाने का प्रयास करते थे, कभी-कभी अपने भीतर तक तो कभी-कभी समाज और समय की मर्यादा से परे तक, जो उस समय प्रतिक्रिया के रूप में उभरती है। समान विषयों पर दी गई प्रतिक्रियाएँ लोगों के अनुसार बदली, जिनके भीतर यह उभरी तथा फैली और यहाँ तक कि वही प्रतिक्रिया बदलते वक्त के अनुसार बदलती गई।

इन सभी मामलों में मानव केंद्र में थे—वे लोग पूछते थे, साथ में जुटे रहते थे या पूछे गए सवालों के नतीजों से इंकार करते थे। लोगों द्वारा खुद दिए गए जवाबों ने सिद्धांतों, संस्कृति, राजनीति, विज्ञान आदि को आकार दिया। समाज ने उन्हें इस तरह अपनाया मानो वो छोटा होने तक कपड़ा पहनने जैसी बात हो। जब उनकी बढ़ती समझ तथा जरूरत के मुताबिक ये चीजे नाकाफी होने लगीं तो लोगों ने उसे अपनाना छोड़ दिया।

ऐसे मामले कम ही थे जिनमें पूछनेवाला खुद के बारे में पूछताछ करता हो और जिस विषय के साथ उसका वास्ता पड़ता है उस विषय के अर्थ में सक्रिय भूमिका निभाने के बारे में वह जागरूक हो जाता है। उल्टे, सवाल पूछने वाले के बारे में खास पकड़ को बिना कोई सवाल पूछे एक वास्तविकता मानकर चला जाता था। यानी यह बात उन्हें इस बात का यकीन दिलाती थी कि विषय पर उनकी पकड़ एक स्वाभाविक बात है, और जो उनसे, विषय के प्रति पहुँच से, उपयोग किए गए साधनों से, और उनकी पूछताछ की परिस्थितियों से मुक्त थी। वास्तविकता जिस तरह से उनके सामने आती थी उसे रूप देने की अपनी सक्रिय भूमिका को उन्होंने नजर अंदाज किया।

इस तरह अपनी प्रारंभिक अवस्था की निष्कपटता उस विषय के प्रति अपनी अधीनता या पूछताछ के नतीजों को अपरिहार्य बना देती है। पूछनेवाला, एक विषय के रूप में खुद को, अर्थों के बनानेवालों को, उनके द्वारा खोजी गयी “वस्तुओं” के निर्माताओं को नजरअंदाज कर देता है। तब वो भूमिकाओं को उलट देते हैं। वह उन ‘वस्तुओं’ को विषयों के रूप में रख देते हैं, उसे तीव्रता से भर देते हैं और एक गैर-मौजूद या गौण तीव्रता के साथ अपने आपको बतौर वस्तु के रूप में रख देते हैं। वहाँ पर देवताओं, शासकों, राज्य, मानव ‘स्वभाव’, एक कुदरती नियम, अस्तित्व का अर्थ, प्रकृति की जबरदस्त धारणा उठ खड़ी होती है। मानव खुद को एक ‘वस्तु’ के रूप में देखते हुए खुद से ऊँचा या महान चीजों की तीव्रता से कामना

4. फर्नान्डो गार्सिया की पुस्तक “भारत की मानवतावादी विरासत” के अध्याय 2 से।

करते हैं, इस तरह से खुद को अमानवीय बना देते हैं। निश्चित ही, अलग-अलग लोग एक ही वस्तु के बारे में पूछताछ करते हैं, उनके नतीजों को एक वास्तविकता के रूप में ग्रहण किया जाता है, जिस वजह से समान मुद्दों पर विरोधी नजरिए बनने लगते हैं तब कमोबेश खूनी टकराव की नौबत आने लगती है। परिणामस्वरूप इसे मानने वालों की संख्या या लोगों के ऊपर हुकूमत करने की प्रक्रिया के मुताबिक ऐसे विश्वासों की "वास्तविकता" या "सच्चाई" घटती बढ़ती रहती है। इतिहास घटनाओं की एक पहली बन जाती है, जिसमें मानव की जिज्ञासा से जन्मी धारणा का उपयोग लोगों के दमन के लिए एक बैनर के रूप में होता है। इसके अलावा चीजों की उस दृष्टि को उन "वास्तविकताओं" या "सच्चाईयों" के नाम पर उन लोगों पर एकाधिकार और लादने के लिए समर्थन के नाम अक्सर अपरिहार्य बना दिया जाता है। कुछ की तीव्रता ठीक उसी तरह स्वीकृत हो जाती है जैसे दूसरों की तीव्रता को नकार दिया जाता है या कुचल दिया जाता है। तब कुछ लोग इसका श्रेय मानवतावाद को देते हैं जिसे दूसरों को नकारा गया होता है। ऐसे अमानवीय बने लोगों को एक ऐसी वस्तु के रूप में देखा जाता है जिनके साथ अमानवीकरण करने वाले की तीव्रता के मुताबिक आचरण किया जाता है।

आइए हम कुछ संक्षिप्त उदाहरण लें, जिसमें अपने खुद के रचनाकार के नाम पर खुद मनुष्य को नीचा दिखाया जाता है और जिसमें मनुष्य को उसके केंद्रीय स्थान से हटा दिया जाता है।

मनुष्य ने बदला लेने वाले देवताओं की कल्पना की है जो आस्तिकों और नास्तिकों के साथ ही साथ लोगों में भेदभाव करने सामाजिक प्रतिरूपों को सजा देते हैं और राजधर्म-विरोधियों को उत्पीड़ित करते हैं।

आर्थिक प्रतिरूप, जो मानव का किसी वस्तु के रूप में व्यापार करते हैं या वस्तु के रूप में निर्माण करते हैं या वस्तु के रूप में उपभोग करते हैं।

इतिहास और मानवजाति की दृष्टि जो उन्हें स्वीकार करने वालों पर अपनी श्रेष्ठता लादती है।

वैज्ञानिक सिद्धांत जो मनुष्य को एक खास जानवर के रूप में गौण बना देते हैं, उनकी श्रेष्ठ भावनाओं तथा आकांक्षाओं को मस्तिष्क रसायन या अनुवांशिक विरासत घोषित कर देते हैं।

मानववैज्ञानिक सिद्धांत जो मनुष्य को परिवेश द्वारा निमंत्रित एक कठपुतली के रूप में देखते हैं।

परिस्थितिकीय सिद्धांत जो मनुष्य को अन्य प्रजातियों में से महज एक प्रजाति समझती है और सबसे बेदतर हैं वो चिकित्सा विज्ञान जो मनुष्य को एक मशीन समझता है, जिसके हिस्सों को बदला जा सकता है या निकल कर फेंक दिया जा सकता है।

शिक्षा व्यवस्था जो विद्यार्थियों को अकर्मण्यक बना देती है, जिन्हें मनमाना रूप दिया जा सकता है।

राजनैतिक सिद्धांत जो श्रेष्ठता, जीत, और लूटमार पर जोर देते हैं।

धर्म जो लोगों को अपने दिलों में या अपने साथ के मनुष्यों में भगवान को ढूढ़ने में मदद करने के बजाए उन पर सत्ता जमाने और नियंत्रण करने देते हैं। सिद्धांत जो राज्य, धर्म, वर्ग, नियम, या बेतुकापन और शून्यवाद को लोगों से ज्यादा महत्त्व देते हैं। इसका धर्म विरोधाभास है आजादी के नाम पर दमन करना, हत्या करना, जैसा कि कुछ लोग करते हैं। उन मामलों में मनुष्य (या मानवजीवन) को केंद्रीय मूल्य के रूप में नहीं रखा जाता है। दूसरे निर्माण या दूसरे मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। दूसरे मूल्यों को खुद को मानवीय बनाने वाले मूल्यों से श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए ये चीजें मनुष्य की खुशी तथा आजादी की सेवा में स्वीकार करने के बजाए एक जंजीर बन जाती हैं, जो उन्हें बनाने वाले लोगों को ही बाँध कर रख देती हैं। मनुष्य देवताओं, सत्ता, विचारों और प्रतिरूपों के नाम पर यातना पा रहा है और मर रहा है, जिसकी उसने खुद रचना की एवम् उन पर विश्वास करने का निर्णय लिया। हर समय मनुष्य इनके केंद्र में छा जाता था और उन विश्वासों के बारे में चुनाव करता था कि वो इन्हें माने कि न माने, इनके मुताबिक काम करे कि न करे। आज धन, मुनाफा और एक खास आर्थिक व्यवस्था को नए देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया जाने का खतरा पैदा हो गया है। आज तथाकथित "मुक्त बाजार" की ताकत को मनुष्य से ज्यादा महत्त्व दिया जाता है, एक ऐसे देवता के रूप में जिसे संतुष्ट करने के लिए इंसानी जिंदगी की बलि चढ़ाई जाती है। सुविधा, वस्तुओं पर अधिकार और सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए उपयोगितावाद की चूहा दौड़ में इंसानी जिंदगी कुचली जा रही है।

इस तमाम प्रक्रिया में मनुष्य चीजों को स्वीकार करने की बाह्यता से मुक्त रहकर अपनी खुद के निर्माण को स्वयं संचालित करते हुए उसे आत्मसात कर लेता है। फिर भी, प्रगतिशील रूप से, मानवजाति में यह असलियत सामने आ रही

है कि वास्तविकता देखनेवाले की "दृष्टि" के मुताबिक होती है। प्रत्येक विशेष "दृष्टि" एक "वास्तविकता" एक "परिदृश्य" का निर्माण करती है, जो उस दृष्टि के निर्माता के लिए भी कमोबेश खुशी या आजादी के रूप में नतीजा बन कर सामने आती है।

दूसरे विश्वासों के द्वारा हटा दिए जाने पर हमारे अपने पुराने विश्वास किस कदर बेतुके और भोले लगते हैं। वे कितने तर्कहीन से लगते हैं, जब उन सुझावात्मक ताकतों से वंचित रहते हैं, जिनसे हम संपन्न रहते हैं। बिना कोई सवाल पूछे हम कितनी आसानी से नए विश्वासों को अपनाने के लिए तैयार हो जाते हैं, एक बार जब हम गिरते मूल्यों के साथ हो जाने पर कितनी आसानी से और आँख मूँद का पुराने विश्वासों को भूल जाते हैं। हम अपने वर्तमान विश्वासों की परख करने से किस कदर हिचकते हैं।

इसलिए मनुष्य को ही जीवन, खुशी, मुक्ति की दिशा में अर्थ समझने दो। संक्षेप में, मनुष्य को खुद अपने ही हित में खुद अर्थ बनाने वाले के हित में उसका अर्थ बनाने दो।

हम निष्पक्ष रूप से इन सब पर प्रकाश डाल सकें, तो हम अनेकत्व और विविधता का सम्मान करने की समझ का एहसास करेंगे, सभी मानव को समान समझने, प्रस्थापित "सत्य" में खोज करने की भावना विकसित करने, तथा हर तरह की हिंसा तथा भेदभाव को नकारने की समझ को महसूस कर पाएँगे।

मनुष्य को केंद्रीय मूल्य में रखने का यह मतलब नहीं है कि आप मनुष्य, समाज, इतिहास, देवता, विज्ञान की नई धारणा से बंध जाएँ या उसकी तलाश में निकल पड़े। इसके विपरीत नया मानवतावाद सभी क्षेत्रों में मुक्त खोज को बढ़ावा देता है। हमें सिर्फ एक बात का एहसास रखना होगा कि हमारी खोज के नतीजे हमेशा ही चीजों को एक नजरिए से देखने का एक तरीका होगा, जो भविष्य में हम मनुष्यों के लिए एक बेहतर तथा श्रेष्ठ तरीके के रूप में सुरक्षित पड़ा रहेगा।

मनुष्य को केंद्रीय मूल्य के रूप में रखने का अर्थ है, इनके परिणाम सभी की खुशी तथा आजादी में वृद्धि करें, बजाए इसके कि वह हिंसा और भेदभाव का एक पर्याय बने। दूसरे शब्दों में हमारे विचार और विश्वास सबसे ऊपर हमारे कार्य, शारीरिक दुखों तथा मानसिक यातनाओं से निजात पाने की सेवा में कार्यरत हों। वह सिर्फ अपनाने वालों की खुशी तथा आजादी में ही योगदान न दे बल्कि हर किसी की भलाई के काम में आए।

ये सारी बातें मानवतावादी सूत्र में पिरोई गई हैं कि—“मानव से बढ़ कर कोई नहीं है, कोई भी मानव किसी के नीचे नहीं है।” इस सूत्र के आधार पर वैश्विक सुनहरा नियम बना है जो कहता है कि—“दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम उनसे अपने प्रति चाहते हो।”

सारांश—जब भी कभी खुशी तथा आजादी का समझौता ऐसी चीज के साथ किया जाता है जो उसे ऊँचा या महान करार दिया जाता है, तब मनुष्य केंद्रीय मूल्य के रूप में नहीं होता। उल्टे मनुष्य को केंद्रीय मूल्य में तब रखा जाता है जब हर चीज को खुशी या आजादी की सेवा में लगा दिया जाता है, या दूसरे शब्दों में दुखों या यातनाओं से निजात पाने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

खुशी और आजादी सभी के लिए होनी चाहिए, न कि कुछ ही लोगों के लिए, इसलिए मानव को केंद्रीय मूल्य में रखने का मतलब है सभी मानव की समानता को स्वीकार करना, व्यक्तिगत तथा सांस्कृतिक विविधता दोनों को मान्यता देना, स्वीकृत सत्य के परे ज्ञान को विकसित करना, विचारों और विश्वासों की आजादी को बनाए रखना और हर तरह की हिंसा का विरोध करना।

उपर्युक्त सभी बातें मानवतावादी सूत्र में समायी हुई हैं कि—“मानव से बढ़कर कोई नहीं है, कोई भी मनुष्य किसी से ऊँचा या नीचा नहीं है। उक्त कथन मानवतावादी आन्दोलन का मूलमन्त्र है।”

विशेष :

इस पुस्तक के अनुवाद करने में निश्चित ही कुछ कमियां रह गई होंगी क्योंकि यह अनुवाद आंदोलन के कुछ सदस्यों, जो कि हिन्दी के विद्वान नहीं हैं, ने खुद किया है। पाठकों से निवेदन है कि अशुद्धियों के बारे में हमें अवगत करायें ताकि इस पुस्तक के अगले संस्करण में उन्हें दूर किया जा सके।